केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक III आर.आर.एल. जोरहाट

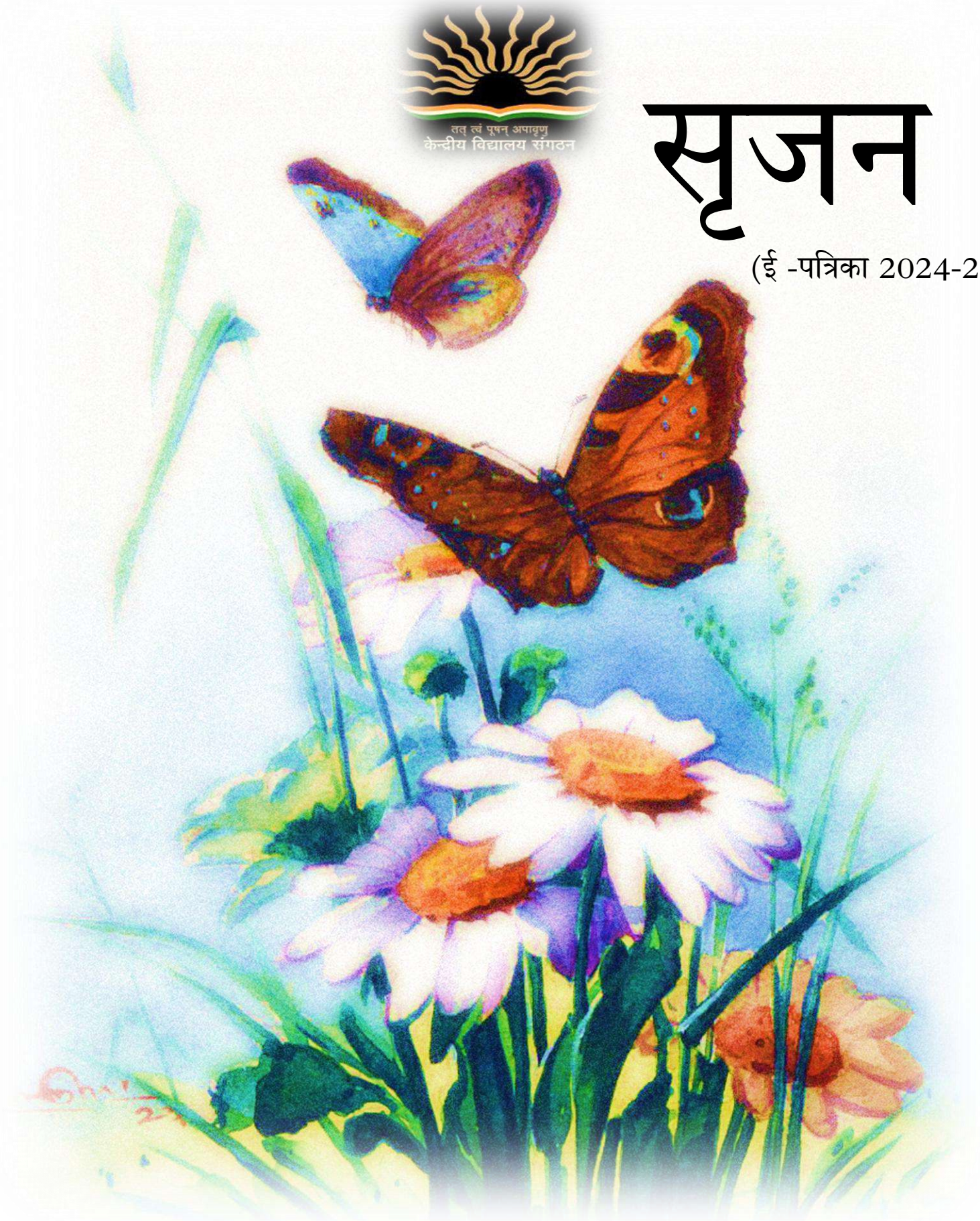

सृजन

(ई -पत्रिका 2024-25)

केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक III आर.आर.एल. जोरहाट

सीएसआईआर-नीस्ट कैंपस, पुलिबर-785006, जोरहाट, असम

वेबसाईट : https://no3jorhat.kvs.ac.in/, ई -मेल : newrrljorhat1477@gmail.com

सृजन 2024-25

विषय सूची

क्र . स .		पेज संख्या
1	शैक्षणिक उपलब्धियां	10
2	विज्ञान विषयक उपलब्धियां	11
3	खेल उपलब्धियां	12
4	टेक ट्राइअम्फ (Tech Triumph)	13
5	हिन्दी अनुभाग	14-21
6	अंग्रेजी अनुभाग	22-40
7	संस्कृत अनुभाग	41-49
8	असमिया अनुभाग	50-54
9	अखबारों में हमारा विद्यालय / पुस्तकालय - एक नजर	55
10	ग्लिम्पसेस ऑफ ऐक्टिविटीज (Glimpses of Activities)	56
11	चेरिशिंग मोमेंट्स ऑफ जॉय एण्ड सेलिब्रैशन (Cherishing Moments of Joy and Celebration)	57 -59
12	चित्रकला	60
13	कक्षा समूह चित्र	61-62

मुख्य संरक्षक CHIEF PATRON

श्रीमती निधि पांडे, आईआईएस MRS. NIDHI PANDEY, IIS
आयुक्त, केविसं (मुख्या.), नई दिल्ली Commissioner, KVS(HQ), New Delhi

संरक्षक PATRON

श्री चन्द्रशेखर आज़ाद SRI CHANDRA SHEKHAR AZAD
उपायुक्त Deputy Commissioner
केविसं गुवाहाटी संभाग KVS Guwahati Region

डॉ. वीरेन्द्र एम. तिवारी DR. VIRENDRA M. TIWARI
निदेशक, सीएसआईआर- नीस्ट Director, CSIR-NEIST
अध्यक्ष वि.प्र.स. Chairman, VMC

श्री आर के पाणिग्रही SHRI RK PANIGRAHI
सहायक आयुक्त Asstistant Commissioner
केविसं गुवाहाटी संभाग KVS Guwahati Region

श्री नरेश कुमार SHRI NARESH KUMAR
सहायक आयुक्त Asstistant Commissioner
केविसं गुवाहाटी संभाग KVS Guwahati Region

श्री रणधीर सिंह SHRI RANDHIR SINGH
सहायक आयुक्त Asstistant Commissioner
केविसं गुवाहाटी संभाग KVS Guwahati Region

समन्वयक COORDINATOR
डॉ. कृष्ण कुमार मोटला, प्राचार्य
DR. KRISHAN KR. MOTLA, Principal
केवि क्र.3 आरआरएल जोरहाट KV No. III RRL Jorhat

संपादक मण्डल EDITORIAL BOARD

सृजन

अंग्रेजी अनुभाग (ENGLISH SECTION)

श्री अली अहमद, परा. स्ना. शि. (अंग्रेजी)
Mr. Ali Ahmed, PGT (English)

श्रीमती नंदिता बोरा, प्र. स्ना. शि. (अंग्रेजी)
Mrs. Nandita Borah, TGT (English)

हिंदी/ संस्कृत अनुभाग
(HINDI/SANSKRIT SECTION)
श्री अजय प्रसाद प्र. स्ना. शि. (संस्कृत)
Mr. Ajay Prasad, TGT (Sanskrit)

कवर पेज ड्रॉइंग एवं कला अनुभाग
(COVER DRAWING & ART SECTION)
श्री राम कुमार पटेल, प्र. स्ना. शि. (क.शि)
Mr. Ram Kumar Patel, TGT (AE)

संपादन, संकलन एवं ग्राफिक डिज़ाइन: नंदिता बोरा, टीजीटी अंग्रेजी

Editing, Compilation, and Graphic Design by

NANDITA BORAH,TGT ENG

उपायुक्त संदेश

केंद्रीय विद्यालय संगठन
KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN
(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन)
(UNDER MINISTRY OF EDUCATION, GOVERNMENT OF INDIA)
क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहाटी / Regional Office, Guwahati
जवाहर नगर, खानापारा / Jawahar Nagar, Khanapara
पिन कोड / Pin Code : 781022
दूरभाष/TEL : 0361-2363105/05/07/08
वेब/Web: https://roguwahati.kvs.gov.in/
ईमेल/E-Mail : kvsroguwahati@gmail.com

फा.20350/46/2024/केविसं(गु.सं)/117/ /893/ दिनांक 02.12.2024

संदेश

मुझे यह जानकर अपार प्रसन्नता हो रही है कि केंद्रीय विद्यालय आर. आर. एल जोरहाट सत्र 2024-25 के लिए अपनी विद्यालय पत्रिका "सृजन" का प्रकाशन कर रहा है। यह पत्रिका न केवल विद्यार्थियों की रचनात्मकता और कल्पनाशीलता को उजागर करती है, बल्कि उनके व्यक्तित्व विकास और चतुर्दिक उन्नति में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

केंद्रीय विद्यालय संगठन का यह प्रयास विद्यार्थियों को शिक्षा के माध्यम से एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करने का है, जो उन्हें न केवल एक उत्कृष्ट छात्र बल्कि एक सशक्त नागरिक बनने के लिए प्रेरित करता है। यह संगठन गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, सांस्कृतिक विविधता और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देकर बच्चों को धर्म, जाति, लिंग और भौगोलिक सीमाओं से ऊपर उठने की प्रेरणा देता है।

मैं इस शुभ अवसर पर विद्यालय परिवार, छात्रों और अभिभावकों को बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि "सृजन" सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगी। विद्यालय के समर्पित शिक्षक, कर्मठ विद्यार्थी और सहयोगी अभिभावक, सभी के प्रयासों से यह यात्रा सफलता के नए कीर्तिमान स्थापित करेगी।

अनन्त शुभकामनाओं सहित !

चन्द्रशेखर
(चन्द्रशेखर आजाद)
उपायुक्त
केंद्रीय विद्यालय संगठन
गुवाहाटी संभाग

अ

ध्य

क्ष

सं

दे

श

सीएसआईआर – उत्तर पूर्व विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संस्थान
वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद
जोरहाट – 785006, असम, भारत

CSIR-NORTH EAST INSTITUTE OF SCIENCE AND TECHNOLOGY
COUNCIL OF SCIENTIFIC & INDUSTRIAL RESEARCH
JORHAT – 785006, ASSAM, INDIA

Dr. Virendra M. Tiwari
FASc, FNA, FNASc, FTAS
DIRECTOR

MESSAGE

At the very outset, I convey my heartiest congratulations to Kendriya Vidyalaya (KV) No.3, RRL, Jorhat, for its endeavour to bring out the Vidyalaya Patrika the 'Srijan' for the year 2024-25. It is indeed heartening to witness that 'Srijan' has provided an apt platform for the students of KV RRL No.3 to showcase their creativity and the laurels earned by the pupils in curricular and co-curricular activities.

I am pleasured to note that KV, RRL is the epitome of quality education and discipline with a rich blend of Indian values and culture-centric principles. I do hope that the school will continue on this journey of earning accolades in all the realms, which cover the whole gamut of technically modern and value-based education, and will keep striving to achieve excellence in the years to come.

I fervently call upon the teachers and the students to remain abreast with the new global developments in science, humanities, and social sciences. Such a practice will broaden the horizon of the students to tackle new challenges in the future with a practical approach. On the other hand, this is the need of the hour for the teacher's fraternity as well, to empower themselves with the know-how that is futuristic. This will be a way towards enlightening future pupils with the best of applied knowledge and balanced problem-solving skills.

With the best compliments

सबसे पहले, मैं 'सृजन' पत्रिका संस्करण 2024-25 के लिए केंद्रीय विद्यालय, नंबर 3, आरआरएल, जोरहाट के सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई देता हूं। यह प्रसन्नता की बात है कि सृजन ने केंद्रीय विद्यालय, आरआरएल के छात्रों को अपनी रचनात्मकता और सह-पाठयक्रम गतिविधियों में अर्जित उपलब्धियों को प्रदर्शित करने के लिए एक उपयुक्त मंच प्रदान किया है।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि केंद्रीय विद्यालय, आरआरएल भारतीय मूल्यों और संस्कृति-केंद्रित सिद्धांतों के समृद्ध मिश्रण के साथ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और अनुशासन का प्रतीक बन गया है। मुझे उम्मीद है कि स्कूल सभी क्षेत्रों में प्रशंसा अर्जित करने की अपनी यात्रा जारी रखेगा, जिसमें तकनीकी रूप से आधुनिक और मूल्य-आधारित शिक्षा का संपूर्ण क्षेत्र सम्मिलित होगा और आने वाले वर्षों में उत्कृष्टता हासिल करने का प्रयास करता रहेगा।

मैं शिक्षकों और छात्रों से विज्ञान, मानविकी और सामाजिक विज्ञान में नए वैश्विक विकास के साथ जुड़े रहने का आग्रह करता हूं। इस तरह के अभ्यास से भविष्य में व्यावहारिक दृष्टिकोण के साथ नई चुनौतियों से निपटने के लिए छात्रों के क्षितिज का विस्तार होगा। दूसरी ओर, शिक्षक समुदाय के लिए भी यह समय की मांग है कि वे स्वयं को भविष्य की जानकारी से सशक्त बनाएं जो भविष्य में विद्यार्थियों को सर्वोत्तम व्यावहारिक ज्ञान और संतुलित समास्याओं से अवगत कराएगा।

प्रशंसा एवं शुभकामनाओं के साथ

डॉ. वी.एम.तिवारी,
निदेशक, सीएसआईआर-एनईआईएसटी, जोरहाट
एवं अध्यक्ष, विद्यालय प्रबंधन समिति

सहायक आयुक्त

संदेश

केंद्रीय विद्यालय संगठन
KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN
(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन)
(UNDER MINISTRY OF EDUCATION, GOVERNMENT OF INDIA)
क्षेत्रीय कार्यालय,गुवाहाटी / Regional Office,Guwahati
जवाहर नगर ,खानापारा/ Jawahar Nagar, Khanapara
पिन कोड/ Pin Code :781022
दूरभाष/TEL. : 0361-2360105,06,07,08
वेब/Web: https://roguwahati.kvs.gov.in/
ई-मेल/E-Mail : kvsroguwahati@gmail.com

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

आज़ादी का अमृत महोत्सव

फा.सं.20350/67/Acad/2024-25/KVS(GR)/50/ 25427 दिनांक- 04.03.2025

अत्यंत हर्ष और गर्व का विषय है कि केंद्रीय विद्यालय आर आर एल जोरहाट अपनी वार्षिक ई-पत्रिका का प्रकाशन करने जा रहा है। यह पत्रिका न केवल विद्यार्थियों की रचनात्मकता और कल्पनाशीलता को मंच प्रदान करती है, बल्कि उनके व्यक्तित्व के बहुमुखी विकास में भी सहायक सिद्ध होती है। केन्द्रीय विद्यालय संगठन का उद्देश्य है कि प्रत्येक विद्यार्थी के भीतर छिपी हुई प्रतिभाओं को प्रोत्साहित कर, उसे उसके उज्ज्वल भविष्य की ओर अग्रसर किया जाए।

विद्यालय पत्रिका उन नन्हे सितारों की अभिव्यक्तियों का संग्रह है जो अपनी मेहनत, सृजनशीलता और सकारात्मक सोच से भविष्य के आकाश में चमकने के लिए तैयार हो रहे हैं। यह मंच उन अंकुरों को पुष्पित और पल्लवित करने का माध्यम है, जिनमें दुनिया को बदलने की शक्ति है।

मैं विद्यालय परिवार, प्रधानाचार्य, संपादक-मंडल और समस्त विद्यार्थियों को इस सृजनात्मक प्रयास के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगी और विद्यार्थियों को अपनी छिपी हुई प्रतिभाओं को पहचानने और निखारने का अवसर प्रदान करेगी।

आप सभी के उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामनाओं के साथ।

मंगलकामनाओं सहित ।

(आर.के. पाणिग्राही)
सहायक आयुक्त
गुवाहाटी संभाग

नामित अध्यक्ष संदेश

प्रिय पाठकों ! ,

मुझे अत्यंत हर्ष और गर्व की अनुभूति हो रही है कि मैंने हमारे प्रतिष्ठित विद्यालय पत्रिका **"सृजन"** के माध्यम से आप सभी को संबोधित किया है। यह पत्रिका हमेशा उन स्मृतियों, उपलब्धियों और आकांक्षाओं का प्रतिबिंब रही है जो शैक्षणिक वर्ष को परिभाषित करती हैं। मैंने सभी को इस शैक्षणिक वर्ष में प्राप्त उपलब्धियों पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित किया है।

केवि क्रमांक ३ आरआरएल जोरहाट हमेशा से विविध प्रतिभाओं का संगम रहा है और यह निरंतर उत्साह व ऊर्जा के साथ आगे बढ़ रहा है। शैक्षणिक उपलब्धियों से लेकर कलात्मक अभिव्यक्तियों तक, एथलेटिक सफलता से लेकर सामुदायिक सेवा पहल तक – ये सभी विद्यालय के प्रत्येक सदस्य की निष्ठा और कठिन परिश्रम का प्रमाण हैं।

मैं विद्यालय के समर्पित शिक्षकों और कर्मचारियों के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करती हूँ, जो विद्यार्थियों और विद्यालय के बौद्धिक एवं भावनात्मक विकास को संवारने के लिए निरंतर प्रयासरत रहते हैं। आपकी उत्कृष्टता के प्रति प्रतिबद्धता और शिक्षा के प्रति जुनून ही विद्यालय की सफलता के मूल प्रेरक तत्व हैं।

मैं आप सभी को इसी जिज्ञासा और उत्साह के साथ अपने प्रयासों को जारी रखने के लिए प्रेरित करती हूँ। इस शैक्षणिक यात्रा में, आपने जिन चुनौतियों का सामना किया है, उन्हें एक नए अवसर के रूप में देखें और हर सफलता को अपने परिश्रम व दृढ़ संकल्प का प्रमाण मानें।

अंत में, सभी शिक्षकों, कर्मचारियों और **सृजन** टीम को मेरी ओर से शुभकामनाएँ।

डॉ. अर्चना मोनी दास
वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर – एनईआईएसटी जोरहाट
नामित अध्यक्ष, वीएमसी, केवी आरआरएल जोरहाट

प्राचार्य संदेश

प्रिय पाठकों ! ,

मुझे यह ई-पत्रिका/विद्यालय पत्रिका 2024-25 प्रकाशित करते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है। जैसे-जैसे हम एक और वर्ष की वृद्धि और सीखने की यात्रा पूरी करने जा रहे हैं, मुझे अपने छात्रों द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में दिखाए गए समग्र उत्कृष्टता पर गर्व और उत्साह हो रहा है। हमारा ध्यान न केवल शैक्षणिक उपलब्धि पर था, बल्कि सर्वांगीण व्यक्तित्व बनने पर भी था, उन कौशलों का विकास करना जो हमें जीवन के हर क्षेत्र में सफलता के लिए तैयार करते हैं।

विद्यालय के दिन खोज के दिन होते हैं, जहाँ आप नए विचारों का पता लगाते हैं, नए कौशल बनाते हैं, और अपने चरित्र को मजबूत करते हैं। सच्ची सफलता केवल ग्रेड से परिभाषित नहीं होती है, बल्कि इस बात से परिभाषित होती है कि हम व्यक्तियों के रूप में कैसे बढ़ते हैं—रचनात्मकता, नेतृत्व, सहयोग और लचीलापन के माध्यम से। चाहे कक्षा में हो, खेल के मैदान में हो, या कलात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से, हर अनुभव आपके एक संपूर्ण व्यक्ति के रूप में विकास में योगदान देता है।

मेरे प्रिय छात्रों, मैं आपको जिज्ञासा, दृढ़ता और आपके शैक्षणिक, भावनात्मक और शारीरिक कल्याण को पोषित करने के संतुलन का आशीर्वाद देता हूँ। याद रखें, हर चुनौती बढ़ने का एक अवसर है, और आपके द्वारा विकसित प्रत्येक कौशल—चाहे टीम वर्क में, समस्या-समाधान में, या संचार में—आपको एक आत्मविश्वासी और सक्षम व्यक्ति बनाता है।

हमारे समर्पित शिक्षकों और कर्मचारियों, आपको न केवल शैक्षणिक मस्तिष्कों को पोषित करने के लिए, बल्कि उन जीवन कौशलों को भी पोषित करने के लिए धन्यवाद जो हमारे छात्रों को जीवन के सभी चरणों में मार्गदर्शन करेंगे। आपका प्रभाव कक्षा से परे जाता है, छात्रों को एक अच्छी तरह से गोल भविष्य की नींव बनाने में मदद करता है।

हमारे माता-पिता, आपका निरंतर समर्थन यह सुनिश्चित करने के लिए अमूल्य है कि प्रत्येक छात्र के पास पनपने के लिए आवश्यक उपकरण और प्रोत्साहन हों। मिलकर, हम एक ऐसा समुदाय बनाते हैं जहाँ हर बच्चा ज्ञान, रचनात्मकता और चरित्र में बढ़ सके।

मैं यहाँ अपने संरक्षकों, मार्गदर्शक और प्रायोजक एजेंसी को उनके निरंतर सहयोग और समर्थन के लिए हार्दिक धन्यवाद और आभार व्यक्त करने का अवसर लेता हूँ। उनके सक्षम मार्गदर्शन ने हमेशा हमें और अधिक उत्कृष्टता प्राप्त करने और अपने प्रयासों को सही दिशा में लगाने के लिए प्रेरित किया है - हमारे उभरते हुए युवाओं के समग्र विकास के लिए। मैं भविष्य में भी उन सभी से समान मार्गदर्शन, प्रेरणा और प्रोत्साहन की अपेक्षा करता हूँ।

यह वर्ष हर कौशल—शैक्षणिक, कलात्मक, एथलेटिक और व्यक्तिगत—को विकसित करने के अवसरों से भरा हो। आइए मिलकर ऐसे छात्रों का निर्माण करें जो न केवल सफल हों बल्कि सहानुभूतिपूर्ण, दयालु और दुनिया में बदलाव लाने के लिए तैयार भी हों।

सादर और आशीर्वाद सहित,

डॉ. कृष्ण कुमार मोटला

प्राचार्य, केवि नंबर 3 आर आर एल जोरहाट

संपादकीय

सृजनात्मक क्षमता को उजागर करने में दृढ़ता की शक्ति

रचनात्मकता को अक्सर एक उपहार के रूप में देखा जाता है, कुछ ऐसा जो केवल कुछ ही लोगों को जन्मजात रूप से प्राप्त होता है। हालांकि, सच्ची रचनात्मकता वास्तव में धैर्य और दृढ़ता का परिणाम होती है। यह केवल एक क्षणिक प्रेरणा नहीं है; बल्कि यह लगातार प्रयास करते रहने, सीखने और विचारों को निखारने की इच्छा है — भले ही परिणाम तुरंत या पूर्ण रूप से सही न हों।

विद्यालय में, हम विभिन्न रचनात्मक चुनौतियों का सामना करते हैं — चाहे वह निबंध लिखना हो, कोई प्रोजेक्ट डिजाइन करना हो, या किसी समस्या का समाधान खोजना हो। कई बार हमारे विचार सहज रूप से नहीं आते, या हमारे प्रयास वैसा परिणाम नहीं देते जैसा हमने सोचा था। यही वह समय होता है जब **दृढ़ता** एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। रचनात्मकता हमसे अपेक्षा करती है कि हम निराशा और असफलता के बावजूद प्रयास करते रहें, यह समझते हुए कि असफलताएं रचनात्मक प्रक्रिया का एक अनिवार्य हिस्सा हैं। जितना अधिक हम प्रयास करते हैं, असफल होते हैं, और अपने विचारों को सुधारते हैं, उतना ही हम उस निर्णायक क्षण के करीब पहुंच जाते हैं जब सफलता मिलती है।

वॉल्ट डिज़्नी रचनात्मकता में दृढ़ता का एक उत्कृष्ट उदाहरण हैं। कई बार अस्वीकृति मिलने और वित्तीय संघर्षों के बावजूद, उन्होंने अपने सपने को साकार करने का प्रयास जारी रखा और अंततः कल्पना और आश्चर्य का एक साम्राज्य खड़ा किया। उनके प्रसिद्ध शब्द, **"हमारे सभी सपने सच हो सकते हैं यदि उन्हें पूरा करने का साहस हमारे भीतर हो"**, हमें याद दिलाते हैं कि रचनात्मक क्षमता को उजागर करने में **दृढ़ता** ही सबसे महत्वपूर्ण कुंजी है।

विद्यालय में यह समझना महत्वपूर्ण है कि असफलता अंत नहीं है, बल्कि विकास की दिशा में एक कदम है। चाहे वह एक चित्र हो जो अपेक्षित रूप से न बना हो, या एक कहानी हो जिसमें और सुधार की आवश्यकता हो, प्रत्येक प्रयास सीखने की प्रक्रिया का हिस्सा होता है। लगातार प्रयोग करने, संशोधन करने और सुधार करते रहने से हम अपनी रचनात्मकता और दृढ़ता को विकसित करते हैं।

अंततः, रचनात्मकता का अर्थ पूर्णता नहीं, बल्कि दृढ़ता है। यह विचारों को निखारने, प्रयोग करने और बाधाओं को पार करने का विषय है। इसलिए, आइए अपनी रचनात्मक कोशिशों में **दृढ़ता** को अपनाएं और इस विश्वास के साथ आगे बढ़ें कि प्रयास और सहनशीलता के माध्यम से हम अपनी पूरी क्षमता को उजागर कर सकते हैं।

अली अहमद, पीजीटी (अंग्रेज़ी)
मुख्य संपादक

केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक III आर.आर.एल. जोरहाट

OUR TOPPERS (90% ABOVE)

CLASS X – AISSE 2024

ARTH KUMAR MAURYA

SCHOOL TOPPER with 94%

CLASS XII – AISSCE 2024

LIZZIE KASHYAP,

SCHOOL TOPPER with 94.2%

BARBIE SARMAH

X-AISSE 2024, 93.8%

SUDEEP CHANDA

X-AISSE 2024 93.2%

DEBARSHEE BORAH

X-AISSE 2024 93%

"परिश्रम और संकल्प के दीप से शिक्षा का आकाश आलोकित होता है, जहाँ उत्कृष्टता कोई मंज़िल नहीं, बल्कि एक सतत यात्रा है।"

विज्ञान विषयक उपलब्धियां (SCIENCE ACHIEVEMENTS)

कक्षा VIII की आइशी प्रिशा बोरा(Aishi Prisha Borah) ने क्षेत्रीय स्तर राज्य स्तरीय बाल वैज्ञानिक प्रदर्शनी (RSBVP) 2024-25 (गुवाहाटी क्षेत्र) में भाग लिया और उप-थीम "प्राकृतिक खेती"(Natural Farming) के तहत राष्ट्रीय स्तर (National Level) के लिए चयनित हुई। आइशी को 'न्यूज़पेपर मल्चिंग' और 'वेस्ट पेपर पेंसिल मेकिंग मशीन' के लिए 'दीनानाथ पांडेय स्मार्ट आइडिया इनोवेशन अवॉर्ड 2025' (समस्त पूर्वोत्तर स्तर) से सम्मानित किया गया।

कक्षा IX के महफूज आलम अहमद (Mehfuz Alam Ahmed) ने विद्यार्थी विज्ञान मंथन 2024-25 की राष्ट्रीय स्तर की ऑनलाइन परीक्षा में भाग लिया और असम के जोरहाट जिले में द्वितीय स्थान (Second position) प्राप्त किया।

कक्षा VIII की ऋषिता हजारिका (Rishita Hazarika) ने विद्यार्थी विज्ञान मंथन 2024-25 की राष्ट्रीय स्तर की ऑनलाइन परीक्षा में भाग लिया और जोरहाट जिला, असम में द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

कक्षा XI-विज्ञान के छात्र अर्थ कुमार मौर्य (Arth Kumar Maurya) ने क्षेत्रीय गणित ओलंपियाड (Regional Mathematical Olympiad-RMO) तथा भारतीय ओलंपियाड क्वालीफायर इन मैथमेटिक्स (IOQM), जो एक राष्ट्रीय स्तर की परीक्षा है, उत्तीर्ण की और INMO 2024-25 में भाग लिया।

निवृत्ति ने केविएस राष्ट्रीय खेल महोत्सव 2024 में चमक बिखेरी

निवृत्ति प्रियम दत्ता(Nivriti Priyam Dutta), केवि नं. III आरआरएल जोरहाट की एक उत्कृष्ट तैराक(Swimmer), ने एक बार फिर केवीएस गुवाहाटी क्षेत्र और विद्यालय का गौरव बढ़ाया है। केविएस राष्ट्रीय खेल महोत्सव (KVS NSM) 2024 में लगातार दूसरे वर्ष राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा करते हुए, निवृति ने अपनी अद्भुत प्रतिभा, दृढ़ संकल्प और खेल भावना का शानदार प्रदर्शन किया।

- **Gold** – 4x100m Freestyle Relay
- **Gold** – 4x100m Medley Relay
- **Silver** – 50m Butterfly
- **Silver** – 100m Butterfly
- **Bronze** – 100m Freestyle

(माननीय सहायक आयुक्त श्री आर.के. पाणिग्रही जी ने निवृति को सम्मानित किया।)

इसके अलावा, केवीएस राष्ट्रीय खेल महोत्सव में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के साथ-साथ, निवृति स्कूल गेम्स फेडरेशन ऑफ इंडिया (SGFI) की प्रतिभागी भी हैं, जिससे उन्होंने एक उच्च प्रतिस्पर्धी स्तर पर अपनी क्षमता साबित की है। तैराकी के प्रति उनकी अटूट निष्ठा और जुनून विद्यालय के युवा खिलाड़ियों के लिए प्रेरणास्रोत बना हुआ है।

उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए **केंद्रीय विद्यालय संगठन (KVS) द्वारा उन्हें 31,000 रुपये की नकद पुरस्कार राशि** प्रदान की गई। अपनी अदम्य इच्छाशक्ति और उत्कृष्टता की खोज के साथ, निवृत्ति एक सच्ची चैंपियन बन रही हैं। हम उसके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं और उम्मीद करते हैं कि वह और भी बड़ी सफलताएँ हासिल करे !

17 छात्रों ने 53वीं क्षेत्रीय खेल प्रतियोगिता 2024-25 (गुवाहाटी) में लिया भाग

केवि नं. 3 आरआरएल के कुल 17 छात्रों ने गुवाहाटी में आयोजित **53वीं क्षेत्रीय खेल प्रतियोगिता 2024-25** में विभिन्न खेलों में भाग लिया। निम्नलिखित छात्रों ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की:

- **प्रियांकु दास (Priyanku Das),कक्षा VIII - एथलेटिक्स U-14 (बालक): स्वर्ण पदक**
- **प्रियांशु हजारिका (Priyanshu Hazarika), कक्षा VIII - टेबल टेनिस U-14 (बालक): कांस्य पदक**
- **निवृत्ति प्रियम दत्ता (Nivriti Priyam Dutta),कक्षा VIII - तैराकी U-14 (बालिका): 3 स्वर्ण पदक**

इन तीनों छात्रों का केविएस **राष्ट्रीय खेल महोत्सव** (KVS NSM) के लिए चयन हुआ।

इसके अलावा, **सोहम मुखर्जी (कक्षा X) - बैडमिंटन U-17 (बालक)** का भी केविएस राष्ट्रीय खेल महोत्सव के लिए चयन हुआ।

TECH TRIUMPH OF THE SESSION

LAUNCH OF NEW WEBSITE

Our New Website is Live! **https://no3jorhat.kvs.ac.in/**

Explore, Connect, and Experience!

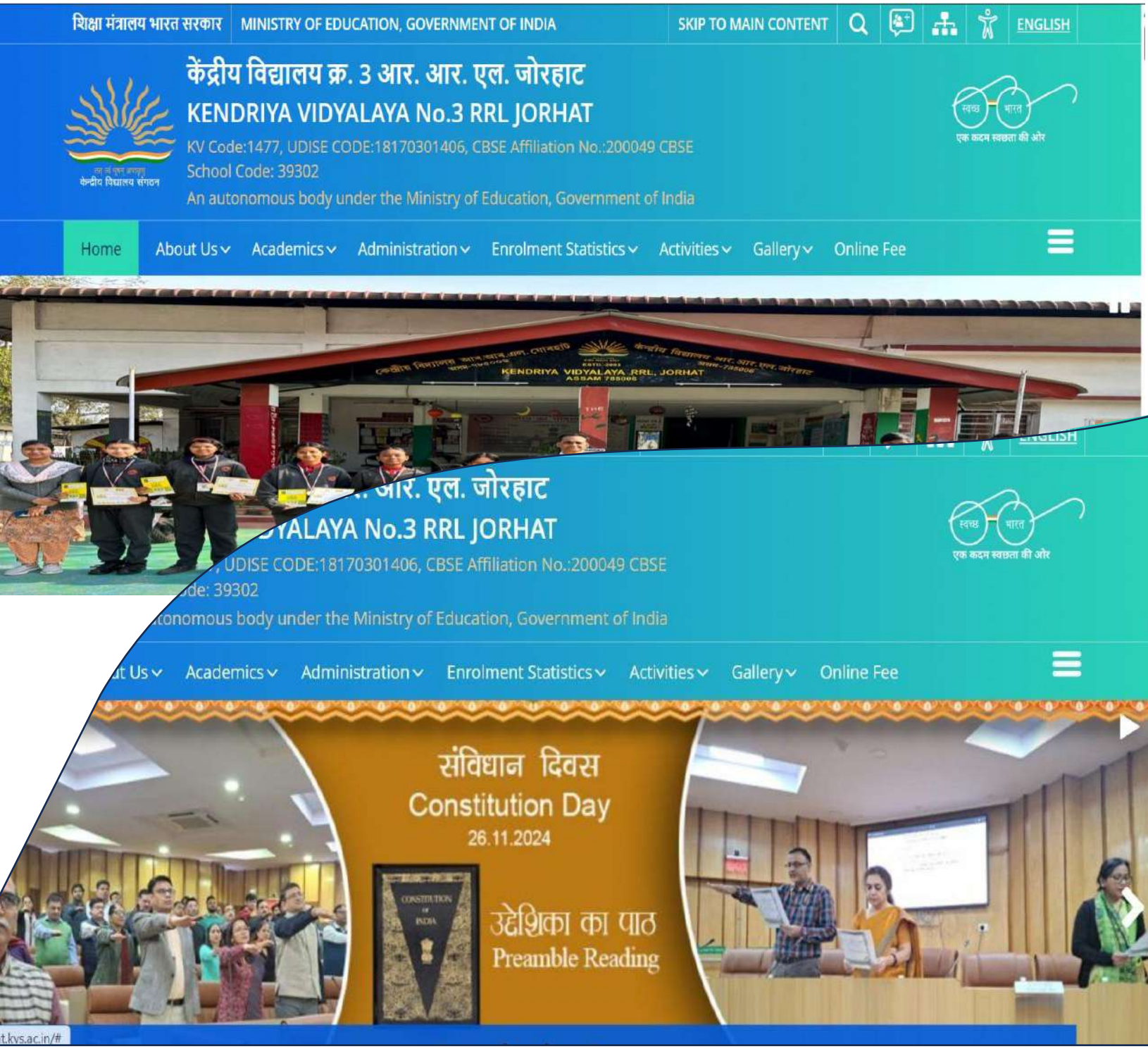

हिन्दी

अनुभाग

वर्तमान परिदृश्य में स्काउटिंग और गाइडिंग की भूमिका

--गोपाल प्रसाद झा, पुस्तकालयाध्यक्ष ,ए.एल.टी. (स्काउट)

आज जब हमारा देश - 'भारत स्काउट्स और गाइड्स'
के ७५वें स्थापना दिवस और इसी अवसर पर विशेष डायमंड जुबली जम्बूरी को
धूमधाम से मना चुका है तो इस क्रम में इसकी भूमिका और भी बढ़ जाती है I

यह वह संस्था है, जहाँ देश-भक्त, बहादुर, फुर्तीले, सक्रिय, बुद्धिमान, अग्रगामी तथा दूरदर्शी नागरिकों का निर्माण किया जाता है I वर्तमान समय में जितनी जरूरत औपचारिक शिक्षा की है, उससे कहीं और ज्यादा उन चीजों की जरुरत है जो इस आन्दोलन के द्वारा बालक-बालिकाओं को दी जाती है I यह उत्तम नागरिकता की पाठशाला है, एक अनौपचारिक शैक्षिक आन्दोलन है, यहाँ प्रसन्नतादायक वातावरण होता है, नेतृत्व का प्रशिक्षण दिया जाता है, इसमें प्रकृति से तादात्म का सुअवसर मिलता है, यहाँ भाई-चारा तथा विश्व-बंधुत्व का पाठ पढ़ाया जाता है I स्काउटिंग एक शैक्षिक खेल है जो बालक बालिकाओं के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करता है I इसके अनुसार एक सु-विकसित व्यक्ति वह है, जिसे स्वयं पर भरोसा हो, जिसमे वातावरण से सामंजस्य करने की क्षमता हो तथा जो स्वयं प्रसन्न रहकर दूसरों को सुख और प्रसन्नता प्रदान करने में समर्थ हो I आज के सामाजिक, धार्मिक, क्षेत्रीय एवं प्राकृतिक अव्यवस्थाओं, जिनके जिम्मेदार हम सब हैं, को इसी संस्था के बालक बालिकाओं के द्वारा पटरी पर लाया जा सकता है I जहाँ व्यक्ति का शारीरिक, चारित्रिक, स्वास्थ्य और कौशल का विकास कर समाज-सेवा और ईश्वर के प्रति कर्त्तव्य-बोध कराया जाता है

स्काउटिंग के जन्मदाता लार्ड बेडेन पॉवेल ने व्यक्तिगत विकास के पांच मूलाधार निर्धारित किये हैं – चरित्र-निर्माण, स्वास्थ्य और बल, कला और कौशल का विकास, समाज-सेवा तथा ईश्वर के प्रति कर्तव्य पालन I आज इन्हीं मूलाधारों की सख्त आवश्यकता है, जिनके द्वारा किसी समाज, देश और विश्व में शांति और सद्भावना की स्थापना की जा सकती है I स्काउटिंग एवं गाइडिंग आन्दोलन का उद्देश्य भी यही है कि 'बालक बालिकाओं का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आध्यात्मिक विकास कर उन्हें उत्तरदायी नागरिक बनाना ताकि वे स्थानीय, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकें I इस आन्दोलन में सिखाने की शुरुआत 'प्रतिदिन एक भलाई का काम' से की जाती है और इसका अंतिम लक्ष्य सामुदायिक सेवा कार्य करना है I स्काउट शिल्प का दल में सीखना जहाँ प्रयोगशाला है वहीँ समुदाय में उसे कर दिखाना उसका प्रयोग I सामुदायिक कार्यों में – अभिरुचि केन्द्रों की स्थापना, स्वच्छता अभियान, प्रौढ़ शिक्षा, वृक्षारोपण, पर्यावरण संतुलन, कुरीतियों के विरुद्ध अभियान, छुआछूत से मुक्ति, राष्ट्रीय एकता, धर्म-निरपेक्षता, कुष्ठ निवारण, बाढ़ या अन्य प्राकृतिक आपदाओं आदि में सेवा कार्यों का संपादन कर स्काउट्स और गाइड्स सामुदायिक सेवाव्रत का परिपालन करते हैं तथा सार्वजनिक संपत्तियों की रक्षा करने में सहायता प्रदान करते हैं I

अगर आप कोरोना के भीषण संकट के उस दौर की बात करें तो जब दुनियां अपने घरों में सिमटी हुई थी, लोग एक दूसरे के पास जाने से भी घबरा रहे थे, सब एक दूसरे के प्रति सशंकित थे, सम्पूर्ण समाज में भय व्याप्त था, फिर भी स्काउट्स और गाइड्स भयमुक्त होकर निःस्वार्थ भाव से जगह-जगह जरुरतमंदों की सेवा और सहायता कर रहे थे I इस तरह शुरुआत से ही भारत के हर एक कोने में सभी प्रकार की आपदाओं के प्रबंधन में स्काउट्स और गाइड्स हमेशा अपना अहम योगदान देता आ रहें हैं I

भारत और भारतीय समाज में सेवा कार्य और सेवा की भावना कोई नई बात नहीं है यह हमारे समाज में सनातन काल से ही चला आ रहा है I महाराणा प्रताप, शिवाजी, सुभाषचंद्र बोस, महात्मा गांधी आदि का जीवन क्या एक स्काउट की भांति उच्चादर्शों का जीवन नहीं था ? उन्होंने सादा जीवन, उच्च विचार तथा प्राकृतिक एवं अनुकरणीय जीवन जीकर समाज को नेतृत्व प्रदान किया और सही राह दिखाई I

हैप्पी स्काउटिंग !!!

मुंबई की यादों से सजी मेरी कहानी

■ रविश कुमार सिंह , कक्षा – IV

मेरी यह कहानी शुरू होती है वर्ष 2019 से, जब मैं पहली बार अपने मम्मी-पापा के साथ सपनों की नगरी मुंबई आया था। जैसे ही हमारी ट्रेन सुबह 8:00 बजे स्टेशन पर पहुंची, मेरा मन उत्साह और उत्सुकता से भर गया। हम टैक्सी में बैठकर सीधे IIT पवई की ओर रवाना हुए। रास्ते भर मेरी आँखें खिड़की से बाहर झाँकती रहीं — ऊँची इमारतें, हरे-भरे पेड़ और भागती हुई मुंबई की ज़िंदगी मुझे जैसे बुला रही थी।

IIT कैंपस के अंदर का दृश्य बहुत ही मनमोहक था — हरे-भरे पेड़, साफ-सुथरी सड़कें, छोटी-छोटी पहाड़ियों का दृश्य और एक शांत माहौल। जैसे ही हम घर पहुँचे, थोड़ी देर आराम किया और फिर पूरे कैंपस की सैर पर निकल पड़े। वहाँ कई खूबसूरत पार्क थे, जिनमें तरह-तरह के झूले लगे थे। पढ़ाई में व्यस्त छात्र-छात्राएं चारों ओर नजर आ रहे थे।

हमारे घर के पीछे एक छोटी सी पहाड़ी थी, जिसका नाम समीर हिल था। उसके पीछे एक बड़ा जंगल फैला हुआ था, जिसमें शेर, चीते, बाघ, हिरण जैसे जानवर रहते थे। कैंपस के भीतर एक विशाल स्टेडियम भी था, जहाँ मैं मम्मी-पापा और अपने भाई के साथ खेलने जाया करता था।

मुंबई की बारिश की तो बात ही निराली है! कभी मैं अकेले, तो कभी पूरे परिवार के साथ बारिश में भीगने का आनंद लेता था। समुद्र किनारे की लहरें, मरीन ड्राइव की चमचमाती सड़कें और "मुंबई का नेकलेस" कहलाने वाला उसका दृश्य आज भी मेरी आँखों के सामने ताज़ा है। मुंबई में मेरे कुछ बहुत प्यारे दोस्त भी बने, जो केरल और तमिलनाडु से थे। और हाँ! हमारे घर पर रोज़ एक कौवा आता था, जिसे मैंने प्यार से 'गोलू' नाम दिया था। वह खिड़की पर बैठकर रोटी माँगता था और हम उसे अपने हाथ से रोटी देते थे। उसे दही भी बहुत पसंद था। साथ ही एक छोटी सी गिलहरी 'चूचू' भी रोज आती थी और अखरोट-रोटी खाकर चली जाती थी।

फिर आया वो समय जिसे शायद कोई नहीं भूल सकता — कोरोना महामारी का दौर। पूरा देश बंद था। न ट्रेनें चल रही थीं, न बसें। लेकिन मेरे पापा उस कठिन समय में भी IIT पवई से भांडुप तक पैदल जाते और लौटते थे। जब सड़कों पर सन्नाटा था, तब हम घर की छत पर लूडो खेलते, चिड़ियों की चहचहाहट सुनते और आसमान को निहारते थे।

कुछ समय बाद, हम भांडुप के नेवी कैंपस में शिफ्ट हो गए। वहाँ भी एक सुंदर सा वातावरण था, हरे-भरे पेड़ों से घिरा हुआ, जहाँ से मेट्रो लाइन बनती दिखाई देती थी। हमारे घर के पास मॉल, मार्केट और स्टेशन सब कुछ था। और वहीं मैंने जाना कि मुंबई की लोकल ट्रेन ही इस शहर की असली जान है। बिना इसके मुंबई अधूरी है।

मुंबई एक ऐसा शहर है जो रात में भी जागता है और दिन में भी दौड़ता रहता है। यहाँ की रफ्तार, यहाँ की चमक और यहाँ की यादें मेरे दिल में हमेशा रहेंगी।

मुझे मुंबई से प्यार है... और मैं हमेशा इस शहर का हिस्सा बने रहना चाहता हूं।

अनुभव

■ उपमन्यु बारिक, कक्षा III

इस बार गर्मी की छुट्टियों में मैंने नेशनल मोबथाई खेल के लिए बहुत सारा अभ्यास किया। मैं असम की तरफ से खेलों को प्रस्तुत करने के लिए चयनित किया गया। 24 मई 2024 में सोनापुर गुवाहाटी में खेल होने की वजह से मैं, मेरी मम्मी, पापा और भाई हम तीनों गाड़ी लेकर गुवाहाटी गए। नेशनल मोबथाई खेल किक बॉक्सिंग खेल में मुझे रजत पदक (सिल्वर मेडल) प्राप्त हुआ। सोनापुर में रहकर मुझे बहुत अच्छा लगा । वहां हमारा प्रशिक्षु (कोच) नई खाने पीने की चीजें हमें उपलब्ध कराई । इसके तीन दिन बाद हमनें घर पहुंच कर आराम किया। वह दिन मुझे हमेशा याद रहेगा क्योंकि बहुत सारी जगह के खिलाड़ियों से मिलने का अवसर मिला ।

दोस्ती की पहचान

■ अभिनव बरुआ , कक्षा V

एक गांव में रानी और रामू दोनों दोस्त रहते थे । एक दिन रानी और रामू रास्ते में जा रहे थे। जाते समय जंगल से एक भालू आ गया। भालू को देखकर रानी और रामू बहुत डर गए। रामू सामने ही एक पेड़ के ऊपर चढ़ गया। परंतु रानी डर से कांपने लगी। एकाएक उसके दिमाग में एक उपाय सूझा और वह तुरंत पेड़ के नीचे सांस बंद करके सो गई । उसी समय उसके दिमाग में मम्मी पापा की बताई बात याद आई कि "भालू मरे हुए प्राणी को नहीं खाता है" । तभी भालू रानी के सामने आया और सूंघकर जंगल में चला गया। जब भालू चला गया, तब रामू ने रानी को पूछा : भालू ने तुम्हारे कान में क्या कहा? तभी रानी ने रामू को कहा कि भालू ने कहा "बुरे समय में जो दोस्त साथ नहीं देते, उनके साथ दोस्ती नहीं रखनी चाहिए"।

चुटकुले

■ संस्कृति रस्तोगी, कक्षा VI

डॉक्टर- तबीयत कैसी है?
मरीज - पहले से ज्यादा खराब है।
डॉक्टर - दवाई खा ली थी?
मरीज - खाली नहीं थी भरी हुई थी
डॉक्टर - अरे ! दवाई पी ली थी?
मरीज - नहीं जी, दवाई नीली थी।

डॉक्टर - हा ।। दवाई को खोल कर मुँह में रख लिया।
मरीज - नहीं, आपने तो फ्रिज में रखने को कहा था।
डॉक्टर - ऐसा है, आप यहाँ से निकलिए।
मरीज- जा रहा हूँ, फिर कब आऊँ?
डॉक्टर - मरने के बाद।
मरीज - मरने के कितने दिन बाद?
डॉक्टर - (बेहोश हो गया) भाई। हम तो गए !!

आलसी रमेश

■ संजुक्ता पराशर ,कक्षा VIII

एक लड़का था जिसका नाम था रमेश था। वह एक बड़ा आलसी लड़का था, वह हर रोज स्कूल जाने में देरी करता था। जब सुबह सुबह रमेश की मम्मी रमेश को जगाने जाती तब वह बोलता हैं कि बेटा उठ जा स्कूल जाने का समय हो चुका हैं, तब वह बोलता हैं मम्मी अभी और पाँच मिनट, थोड़ी देर बाद जब रमेश की मम्मी आती हैं, तब वह फिर वही करता है। ऐसे ही करते-करते उसके कई महीने बीत गए। और अब बहुत देर हो गई थी। तब वह जल्दी-जल्दी अपने स्कूल पहुंचता है। और उसे कक्षा में खड़ा होना पड़ता है। रमेश यह कार्य हर दिन करने लगा और धीरे-धीरे उसकी आदत सी बन गई। वह हर दिन कक्षा में खड़ा होता है, ऐसे ही करते-करते परीक्षा का समय आ चुका था, परीक्षा के दिन मम्मी ने उठाया उस दिन भी रमेश का जवाब एक ही था। दूसरी बार उसकी मम्मी ने उसे नहीं उठाया, उसकी मम्मी ने सोचा कि यह हर दिन ऐसा ही करता है, इसे सबक सिखाना पड़ेगा । उस दिन उसकी बस छूट गई थी, वह परीक्षा नहीं दे पाया था। उस दिन से रमेश को यह शिक्षा मिलती है कि कभी-भी आलस नहीं करना चाहिए ।

मेरे भविष्य की आकांक्षा

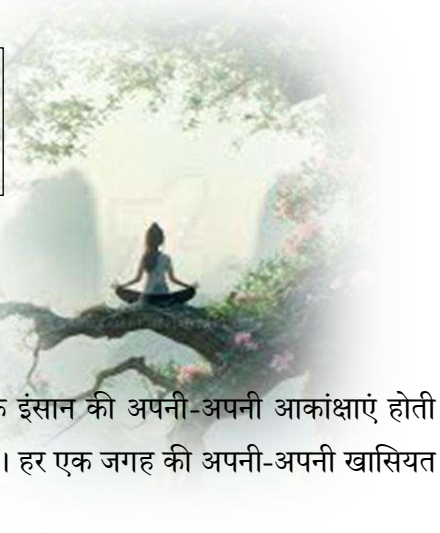

■ देवर्षी बोरा, कक्षा XI

"कर्म से पहले चाहिए होती है उसे करने की आकांक्षा"।

आकांक्षा के साथ हौसला है तो कोई भी कार्य कठिन नहीं। हमारे देश में हर एक इंसान की अपनी-अपनी आकांक्षाएं होती हैं, कोई चिकित्सक बनना चाहता है, कोई इंजीनियर, कोई टीचर तो कोई खिलाड़ी। हर एक जगह की अपनी-अपनी खासियत होती है, पर सबसे ज्यादा खास बात तो एक अच्छा इंसान बनने में है।

मैं या मेरे दोस्त बाहर जाए और किसी जाने इंसान से मिले तो हमें सबसे पहले पूछा जाता है कि हम क्या बनना चाहते हैं। वैसे तो हर कोई अलग-अलग कार्यों के नाम लेता है पर इन सब के बीच एक अच्छा इंसान बनना ही सबसे महत्वपूर्ण है। देश और विद्या की वृद्धि एक नेक और सच्चा इंसान ही का सकता है।

मैं चाहती हूँ कि मैं बड़े होकर जिन्दगी में जो भी बनूँ, टीचर, डॉक्टर, इंजीनियर, या कोई अन्य पेशे में जाऊँ परन्तु एक अच्छा इंसान सबसे पहले बनूंगी। मैं बड़ी होकर पूरी कोशिश करूंगी कि एक नेक इंसान बनूँ और हमारे देश में वृद्धि लाने में मदद करूँ। मैं साथ ही यह भी आकांक्षा रखती हूँ कि मैं, मेरे दोस्तों और जाने पहचाने लोगो को भी इस विषय पर जानकारी दे पाऊं और अच्छाई की ओर पहला कदम ले पाऊं। "कर्म से पहले चाहिए होती है, उसे करने की आकांक्षा"।

पेड़

■ अर्नब हजारिका, कक्षा I

मैं हूं पेड़ मुझे मत काटो,
टुकड़ों -टुकड़ों में मुझे मत बांटो ।
दर्द मुझे भी होता है
मन मेरा भी रोता है
मैं हूं मित्र तुम्हारा
सखा भी सबसे न्यारा ।
अपने फल खुद नहीं खाता हूं,
सब तुम्हें ही तो दे जाता हूं।
जहरीली गैस पी जाता हूं।

भारत

■ अनन्या झा, कक्षा I

हम सब भारतवासी हैं
देश को साफ रखना है ।
ना करे जो काम ऐसा
उसे नहीं माफ करना है ।
हिंदू मुस्लिम सिख ईसाई
हमें आपस में ना बैर रखना है।
हम सबके मजहब को मिलकर
भारत को आगे करना है ।
देश विदेश चाहे जाना
अपने भारत को न भुलाना
हम सबका भारत देश महान
यहां पर सब है एक समान।

कृष्ण तेरी शरण में

■ आर्यश्री भरली, कक्षा VIII

कृष्ण जब मेरे घर आए,
तभी सब सुख मैंने पाए।
तुम बिन जग नहीं चल पाए,
सब तुम्हारी शरण में आए।
मेरा मन सब तुम्हीं में समाया है,
सभी सुख तुम्हीं में पाया है।
हे कृष्ण, तेरी शरण में सब जग समाया है ।

पेड़

■ स्वराज दास, कक्षा IV

पेड़ बचाओ, पेड़ बचाओ
भूमि सड़कें छाया बिछाओ
पेड़ लगाओ पेड़ लगाओ
गली मोहल्ले स्वच्छ बनाओ ।
बगीचे उगाओ आंगन लगाओ
पारिस्थितिकी तंत्र को संतुलित बनाओ।
अधिक से अधिक पेड़ लगाओ
वन कटाई पर रोक लगाओ ।
आओ मिलकर पेड़ लगाएं
धरती पर हरी-भरी हरियाली लाएं ।
प्रदूषण को दूर हटाएं
स्वर्ग सा संसार बनाएं
आओ इन्हें अब सुरक्षित करें
पेड़ पौधे हैं हमारे
आओ इन्हें अब प्यार करें ।

मेहनत

■ अभय दीक्षित(अध्यापक)

तू डर मत चलता जा

लम्बा सफर हैं थोड़ा वक्त लगेगा
कुछ सवाल जवाब मांगेंगे तुझसे
पर तू डर मत जवाब उनके ढूंढे जा।

रास्ता पूछेगा तुझसे की तुझे जाना कहां है
तू रास्ते से कर दोस्ती उसको मंजिल की राह बताए जा
बेशक कठिन होगा खुदसे खुद के लिए लड़ना
पर तू डर मत आगे बढ़े जा।

कि अभी चला है कुछ कदम
आगे तो कई कदम और बाकी हैं
कैसे करेगा इन क़दमो की ताकत को साकार
बस यही सोच तू निराशा के बादल हटाए जा।

लोग जो कहते हैं उन्हें कहने दो
लोगों का काम है कहना
तू ज्यादा सोच मत उनको गलत साबित करने के लिए
मेहनत किये जा तू डर मत खुदको साबित किये जा।

हाँ देखना एक दिन कामयाबी शोर मचाएगी जरूर
तालियों से गूँज उठेगा आंगन
तब यही बोलने वाले होंगे भीड़ में सब तरफ़
करने को तेरा सत्कार और स्वागत।

तब मिलेगा तुझे अपनी मेहनत का फल
और होगी तेरी मेहनत साकार
कि अभी भी तू सोच मत और मेहनत किये जा

ऊँचाईयों तक पहुंचने के लिए कदम और **बढ़ाए जा।**

हिंदी अंतर

■ प्रियांकी पायेंग, कक्षा IV

सबसे प्यारी सबसे न्यारी
हिंदी है राष्ट्रभाषा हमारी ।
हमको लगती सबसे प्यारी
हिंदी से पहचान हमारी ।
कश्मीर से हो कन्याकुमारी
हिंदी है संस्कृति हमारी ।
हिंदी है हम सबको प्यारी
यह सम्मान की है अधिकारी ।

■ शुभांकर बोरा , कक्षा VII

कृष्ण जैसा मित्र नहीं
हनुमान जैसा भक्त नहीं
बलराम जैसा बड़ा भाई नहीं
लक्ष्मण जैसा छोटा भाई नहीं
कर्ण जैसा दानी नहीं
रावण जैसा अहंकारी नहीं
श्रवण जैसा पुत्र नहीं
परशुराम सा गुरु नहीं
सीता जैसी स्त्री नहीं
राम जैसा पति नहीं
सनातन जैसा धर्म नहीं
भारत जैसा देश नहीं ।

ENGLISH SECTION

21st Century Skills: Preparing Students for the Future

By Dr.Krishan Kumar Motla
Principal
Kendriya Vidyalaya No.III, RRL, Jorhat

The world is evolving at an unprecedented pace. Rapid advancements in technology, globalization, and changing societal structures necessitate a new set of skills for individuals to succeed in the 21st century. Recognizing this need, the National Education Policy (NEP) 2020 emphasizes the integration of these essential competencies into the school curriculum to equip students for future challenges and opportunities.

The Importance of 21st Century Skills

NEP 2020* marks a significant shift from rote learning to competency-based education, acknowledging that today's interconnected world demands individuals who can adapt, innovate, and solve complex problems. The policy underscores the importance of the core 4Cs: **critical thinking, communication, collaboration, and creativity**. These skills are no longer optional; they are fundamental for students to navigate the complexities of the modern world.

Critical thinking fosters analytical reasoning, enabling students to evaluate information and make informed decisions. **Communication skills** are essential for effective expression, collaboration, and relationship-building within educational institutions and beyond. **Collaboration** prepares students for teamwork, an indispensable requirement in professional and social settings. Lastly, **creativity** fuels innovation, empowering students to generate novel ideas and solutions.

Nurturing 21st Century Skills in Schools:

NEP 2020* advocates for pedagogical reforms that actively cultivate 21st-century skills. The policy promotes **experiential learning, project-based learning, and inquiry-driven approaches**, which provide meaningful opportunities for students to develop these competencies.For instance, **integrating coding** into the curriculum from an early age strengthens problem-solving abilities and prepares students for technology-driven careers. **Project-based learning** encourages students to address real-world problems collaboratively, enhancing their critical thinking and teamwork capabilities. These student-centric, active learning methods foster initiative and engagement, aligning with contemporary educational needs.

Overcoming Implementation Challenges

Despite the strong framework outlined in NEP 2020, integrating 21st-century skills into education faces challenges. Limited resources, traditional teaching methodologies, and the need for teacher training pose significant obstacles. However, the policy addresses these concerns by emphasizing **continuous professional development for teachers**, equipping them with effective strategies to nurture these skills in students.

Additionally, NEP 2020 highlights the necessity of **inclusive and supportive learning environments**, ensuring equitable access to quality education for all students. By focusing on best practices, innovation, and adaptability, schools can effectively implement these reforms and prepare students for the future.

The Road Ahead: Future-Ready Education

NEP 2020 provides a forward-thinking framework for embedding 21st-century skills into school education. By emphasizing **critical thinking, communication, collaboration, and creativity**, the policy empowers educators to prepare students for an increasingly complex world.

To fulfil this vision, embracing **innovative teaching methodologies** and ensuring **equitable access to educational resources** are crucial. A future-ready education system, as envisioned by NEP 2020, will not only equip students with academic knowledge but also instill in them the skills and adaptability required to thrive in a dynamic global landscape.

By fostering these competencies, educators and policymakers can ensure that students are not just academically proficient but also prepared to lead, innovate, and contribute meaningfully to society in the 21st century.

Reference:

*1.*National Education Polciy 2020, Ministry of Education, Govt.of India*

Chase Your Dreams

(A Lesson from The Alchemist)

By Nandita Borah,TGT English

Have you ever had a dream—something you truly wanted to achieve? Maybe it's speaking English fluently, becoming a singer, an artist, or traveling the world. But then, doubts creep in: What if I fail? What if it's too hard? Many people often give up on their dreams because they fear of failure. But those who keep going, despite challenges, are the ones who truly succeed.

There is a book I read years ago that has always stuck with me. It was so impactful that I recently went through it again—Paulo Coelho's *The Alchemist*. It tells the story of a young shepherd, Santiago, who sets out on a journey to follow his dream. Along the way, he faces struggles, moments of doubt, and even failure. However, he learns a powerful lesson: when you truly desire something, the entire universe helps you achieve it. Dreams give direction to our lives. They are not just wishes but a reflection of what we are passionate about. However, many people abandon their dreams because they are afraid of failure or criticism. They choose a safer path instead of following what truly excites them. But *The Alchemist* teaches us that real happiness comes from pursuing what we love, even if the journey is uncertain. Santiago could have remained a simple shepherd, living a comfortable but ordinary life. However, he decided to take a risk and follow his heart. His journey was not easy—he lost money, faced betrayal, and struggled with self-doubt. Yet, he kept moving forward, and in the end, he found something far greater than material wealth—he found his true purpose. Fear is one of the biggest obstacles that stop people from chasing their dreams. Many students fear speaking English because they worry about making mistakes.

Others hesitate to follow their passions because they are afraid of failure or what others might say. But fear becomes more powerful when we let it to control us. In *The Alchemist*, Santiago learns that fear is natural, but it should never stop us from moving forward. He realizes that every challenge is an opportunity to grow. In the same way, every mistake you make while learning English, every struggle you face in achieving your goals, is a step toward improvement. First step is always the most difficult step of any journey. Many dreams remain unfulfilled simply because people never begin. *The Alchemist* teaches us that we must start, no matter how small our first step is.

If your dream is to speak English fluently, start today. Read a short story, speak a few sentences, or watch a movie in English. If you dream of becoming a writer, write something every day, even if it's just a paragraph. Taking small steps consistently will eventually lead to great achievements. Santiago's story is a reminder that belief in oneself is the key to success.

IT'S YOUR PATH AND YOU MUST WALK ON IT. CHALLENGES ARE CERTAIN, AND MOMENTS OF DOUBTS WILL FOLLOW YOU. BUT IF YOU KEEP BELIEVING AND KEEP WORKING, YOU WILL REACH YOUR DESTINATION.

Many great people faced failure before achieving success. Thomas Edison who invented the light bulb, failed thousands of times before inventing the it. J.K. Rowling was rejected multiple times before *Harry Potter* became a global success. What made them different was their determination. They believed in their dreams and never gave up.

Dreams matter! Whether it is mastering English, becoming a scientist, or achieving something unique, do not let fear stop you. The journey may be challenging, but it will always be rewarding. Just like Santiago, take the first step, overcome your fears, and keep moving forward. Because when you truly want something, and work for it, the universe will help you achieve it.

So, dare to dream. Dare to chase it and dare to believe in yourself!

My Camp at RFRI

By Mahfuz Alam ahmed, Class IX

This year, in the month of August, I attended a Training Camp at ICFRE - Rain Forest Research Institute (RFRI), Jorhat including four other students from my school. Two of them were from my class, Bhavya and Ramanuj and the other two were girls from Class XI. The camp was scheduled for 3 days, from 21st – 23rd August, but we had to report at the institute on 20th August. I reached the Campus with my father and Bhavya and got the keys for my room. After a tour of my room everyone gathered at the Dining Hall for a tea break. There were twenty students from the 3 KVs of Jorhat. Out of which five were from KV RRL, five were from KV ONGC and ten were from KV AFS. That night, all of us boys were getting introduced to each other and we all sang songs and enjoyed our first night.

The next day, we all reported at the main hall. The Principals from the three KV's were invited as the guests and we all attended the Inaugural Session. Then we were given some info on the Institute and were taken to explore the facilities and laboratories of the institute. On 22nd August, after breakfast we visited the Orchid Park in Kaziranga. There were 4 students per car and the road trip was so fun. We saw various types of Orchids, flowers, and also saw ancient instruments and also attended the function there where various dances from North East were performed. The same day we visited the Animal Rescue Centre near Golaghat and then after our return we were given some information about the Bird Watching programme we were going to have the very next day.

For our dinner, we had a party at Oppulence Resort where we had our dinner that day, the food was very delicious as well. On 23rd August, we all woke up early for Bird Watching in the campus. We saw many birds so closely and it was so fun. Then the same day we visited the Gibbon Wildlife Sanctuary in Mariani where we say the Gibbon. Then we had a Quiz Competition on GK where my team finished 2nd . Then by around 4PM we had our Valedictory session where everyone was given a certificate and a momento. It was one of the experiences that I will never forget in my life, the fun me and my friends had there was golden, I hope I will be able to visit RFRI again with my friend in the future.

Sunita Williams Special

By Aishi Prisha Borah, Class VII

Sunita Williams, a NASA astronaut of Indian origin, has been making headlines recently due to her extended stay at the International Space Station (ISS). Initially, Williams and her colleague Butch Wilmore were supposed to return to Earth in June 2024 after an eight-day mission, but technical issues with their Boeing Starliner spacecraft delayed their return. The duo has been aboard the ISS since June 6, 2024, and were originally scheduled to stay for just a week, but their mission was extended due to thruster malfunctions and helium leaks discovered mid-flight. Despite the challenges, Williams and Wilmore have been making the most of their extended stay, conducting science experiments, including gene sequencing in microgravity, and testing the Starliner as a 'safe haven' vehicle. Williams, a seasoned astronaut with multiple spacewalks under her belt, has been an inspiration to many, particularly young women and girls, around the world. Her remarkable journey, which has taken her from being a naval aviator to a NASA astronaut, is a testament to her determination and perseverance. After being stranded in space for nine months, Williams and Wilmore finally returned to Earth on March 19, 2025, aboard SpaceX's Crew-9 Dragon capsule, splashing down safely in the Atlantic Ocean. The Indian Space Research Organisation (ISRO) welcomed Williams back home, praising her resilience and dedication to space exploration. As Williams readjusts to life on Earth, she will undoubtedly continue to inspire and motivate future generations of space enthusiasts and explorers.

The Axe and The Woodcutter

By Rajdeep Baruah,Class- VI

ONCE there lived a woodcutter in a village. He was poor but hard-working. He used to go to the forest to cut down trees for wood. He sold them in the market and earned money for some food.

One day as he was cutting a tree, his axe accidentally fell into the river. The river was deep and was flowing fast. It carried away his axe swiftly. The woodcutter sat at the bank of the river and began to cry.

Suddenly, the Goddess of the river arose and asked him what happened. The woodcutter told her the story. The Goddess of the river offered to help him by looking for his axe.

She disappeared into the river and soon came up with a golden axe. The Goddess asked the woodcutter if it was his axe, but the woodcutter said it was not his.

She disappeared again and this time came back with a silver axe. Again, she asked him if it belongs to him, but the woodcutter said that that was not his either.

The Goddess disappeared into the water again and this time came back with an iron axe. The woodcutter jumped with joy and said it was his. The Goddess was impressed with the woodcutter's honesty and gifted him both the golden and the silver axes.

Moral: Honesty is the best policy.

Amazing Facts Of Assam

By Manashree Bonia, Class VII

{1} Majuli, the world's largest river island in Assam.

{2} Mata Kamakhya Devi temple, India's largest Shaktipeeth in Assam.

{3} Brahmaputra, India's widest river in Assam.

{4} Sualkuchi, the world's largest weaving village in Assam.

{5} Rang Ghar Asia's oldest amphitheatre in Assam.

{6} Dibrugarh,India's Tea capital in Assam.

{7} Umananda, world's smallest river island in Assam.

{8} Assam State Zoo cum Botanical Garden, the largest zoo in northeast ,located in Assam.

{9} Kaziranga National park, Manas National Park, and Charaideo Moidams are world's heritage sites in Assam.

{10} Jagiroad dry fish market, the Asia's largest dry fish market in Assam.

The Mysterious Paintbox

By Chandramallika Phukan,Class VII

Rahul had always been fascinated by his grandfather's old trunk in the attic. It was locked, and his grandfather had never opened it in front of him. One summer vacation, Rahul's curiosity got the better of him. He decided to explore the trunk.

As he opened the trunk, a faint smell of paint and turpentine wafted out. Inside, Rahul found an old paintbox, a few paint-stained brushes, and a note. The note read:

"For the one who sees beyond the ordinary."

Rahul was intrigued. He took the paintbox and brushes downstairs, eager to try them out. As he began to paint, he noticed something strange. The colors seemed to come alive on the canvas!

A beautiful landscape unfolded before his eyes, with rolling hills, towering trees, and a sparkling lake. Rahul felt as though he had entered the painting itself!

Suddenly, he heard a soft voice behind him. "You have unlocked the magic of the paintbox." Rahul turned to see his grandfather standing there, a warm smile on his face.

"It was mine when I was a boy," his grandfather explained. "I used it to paint the world as I saw it – full of wonder and magic. Now, it's your turn to see beyond the ordinary."

From that day on, Rahul used the paintbox to create incredible works of art. He learned that with a little imagination and creativity, even the ordinary could become extraordinary.

The mysterious paintbox had unlocked not only its own magic but also Rahul's. And as he grew up, he never forgot the lessons he learned from that special summer – to always see beyond the ordinary and to never stop exploring the magic within himself.

THOUGHTS

By Tamishra Tanaya Gogoi,Class VIII

1. "Success doesn’t come from what you do occasionally, it comes from what you do consistently." – Keep going, even when it's tough.

2. "Every setback is a setup for a comeback." – Challenges are opportunities in disguise.

3. "Don’t watch the clock; do what it does. Keep going." – Time keeps moving, and so should you.

4. "Your only limit is your mind." – Believe in your potential, and you’ll achieve more than you ever imagined.

5. "Start where you are. Use what you have. Do what you can." – Progress, no matter how small, is still progress.

6. "You don’t have to be great to start, but you have to start to be great." – Take that first step today.

How to Love Yourself: *A Guide to Building Self-Worth*

By Puja Deuri,Class IX

Loving yourself is one of the most important steps to leading a happy, successful, and fulfilling life. It's about accepting who you are, treating yourself with kindness, and nurturing your emotional well-being. Here's how to practice self-love, especially when navigating the challenges of school life:

1. Be Kind to Yourself

We all have moments where we feel down, or when things don't go as planned. Instead of being your harshest critic, treat yourself with the same kindness you'd offer to a friend. Understand that mistakes are part of learning and growth, not signs of failure.

2. Celebrate Your Unique Qualities

Each person has something special about them. Whether it's your creativity, your sense of humor, or your ability to help others, take time to appreciate what makes you you. Write down your strengths and reflect on them regularly.

3. Set Healthy Boundaries

It's easy to get overwhelmed with schoolwork, social pressures, and extracurriculars. Learning to say no when necessary helps you preserve your energy and focus on what's most important. Setting boundaries teaches you to respect your needs and your time.

4. Practice Gratitude

Gratitude isn't just about recognizing the good things in your life; it's also about appreciating yourself. Take a few minutes every day to jot down things you're grateful for, including your own talents, strengths, and the progress you've made.

5. Challenge Negative Thoughts

We all have moments of self-doubt, but it's essential to challenge those negative thoughts. Instead of thinking, "I'm not good enough," reframe it to, "I am learning and growing." Remind yourself that everyone has their own pace and journey.

6. Prioritize Self-Care

Taking care of your mind and body is key to loving yourself. Make time for things that relax and rejuvenate you—whether it's reading, exercising, meditating, or spending time with friends. A balanced routine helps you feel refreshed and empowered.

7. Forgive Yourself

It's okay to make mistakes. Self-love means letting go of guilt and forgiving yourself. If you didn't do as well on a test or missed an assignment, don't dwell on it. Focus on what you can do better next time and remind yourself that you're doing your best.

8. Surround Yourself with Supportive People

The people you spend time with can influence how you feel about yourself. Surround yourself with friends, family, and mentors who encourage and inspire you. Positive relationships will help reinforce your self-worth and remind you that you're never alone.

9. Be Patient with Your Growth

Loving yourself isn't a destination; it's a journey. You may have days when you feel less confident, and that's okay. Be patient with yourself, knowing that growth takes time. The key is to keep trying and to practice self-compassion every day.

10. Remember: You Are Enough

In a world that sometimes makes you feel like you need to be perfect, remember that you are enough just as you are. Your worth isn't determined by grades, appearance, or the opinions of others. You deserve love and respect simply because you exist.

By practicing these steps, you'll build a stronger, more loving relationship with yourself. Remember, self-love is not about being perfect—it's about accepting yourself with all your strengths and imperfections.

POWER OF UNITY

By Sanjay Ray Borah, Class V

Once upon a time, there lived an old man. He had three sons. Three of them always fight among them. The old man always advices his sons to live with unity. He said them, "If we stay with unity, we can win against even the most powerful enemy". But his sons never payed attention to their father's advice. One day the old man fell ill. He called all of his three sons, then he gave them some branches to break. One by one, they broke them easily. Then he gave one of his sons and gave him a bundle of branches to break it. None can break the bundle of branches. Then he, said them, "Try to break it together". Then the bundle of branches broke. Then his son realized the power of unity. Then his son promised to their father that they would stay with unity.

Moral – Unity is strength

SUCCESS

By Subhankar Borah,Class VII

Success is a concept that holds different individuals. For some, it may entail achieving financial prosperity, while for others, it could mean making a positive impact on society or attaining personal fulfillments. Regardless of the definition, success is universally pursued and celebrated. Success can be defined as the realization of one's goals and aspirations. It involves seeking objections, working diligently towards them, and ultimately achieving desired outcomes.

POETRY

GLOBAL WARMING

By Bhargavi K Borah,Class X

The sun shone bright,
And all seemed right,
Until night's canvas unveiled
Its beautiful blue light.
I do really wonder,
Does the sun feel envious of the night?
As at the day time,
The temperature rises like
It could almost burn a kite.
But the night's cooling breeze,
Soothes the earth's burning ache.
It leaves the night with stars,
And the daylight with scars.
Earth as a mother,
Crying in pain,
She is afraid,
She could never have
Her green trees again.
She is afraid,
In five or more years,
Humanity could not be
Found again

HOLIDAY

By Sohum Mukherjee,Class X

I love peace,

So I went to the beach.

I think the beach is cool,

But some people here are fool.

I ate so many crabs,

What will be of my abs?

Then I took a bath,

To keep the germs apart.

Later I ate lunch,

As I was hungry too much.

Then I went to bed,

And put the pillow under my head.

Holiday ends like that,

And that's what I had.

MY FAVOURITE SCHOOL

By Aadrika Burhagohain,Class – IV

This is my favorite place to be.
Let us see the different rooms where I love to be,
This is my classroom, my daily place to be.
Place to meet my teachers and friends happily.

This is the library where we sit to read,
A maze of books to choose when in need.
Computer lab is the one you ought to see,
Not to touch the wires and keep it accident free.

This is the playground where we love to be.
Ready to play the games at count of 1,2,3.
This is the school we love,
This is my favorite place to be.

MY SCHOOL, MY HAPPY PLACE

By Chandrangshu Phukan,Class II

I go to school with a smile so bright,
I see my friends, and everything's all right.
My teachers guide me, with a helping hand,
I learn and play, in this happy land.

The swings and slides, bring joy to my day,
I laugh and play, in my own special way.
My school is a place, where I grow and learn,
With friends and teachers, who help me yearn.

" Lets be a Chemical Detective"

-By Sakshi Tiwari, PGT Chemistry

Imagine you're a detective, on a thrilling case,
To uncover the secrets in a chemical space.
We've got clues to follow, reactions to find,
Are you ready to search, with an eager mind?

First clue: A gas that makes you breathe deep,
It's essential for life, from the mountains to the sweep.
What's this gas? It's clear and it's free,
Yes, it's Oxygen —can you guess its key?

Now, clue number two, let's look at the sun,
This element shines and warms everyone.
It bonds with others in a fiery dance,
It's Hydrogen —giving energy a chance!

Moving towards the third clue, I am in your bones and I make your teeth strong, you will find me in milk ,where I belong.
Yes ,I am Calcium, I help you grow tall, I am in every skeleton ,standing proud and tall !

Next, a mystery compound, with a salty taste,
In your kitchen or ocean, it's never misplaced.
It's made from two elements, one's Sodium, you see,
What's the other one? Chlorine—it's NaCl —that's the key!

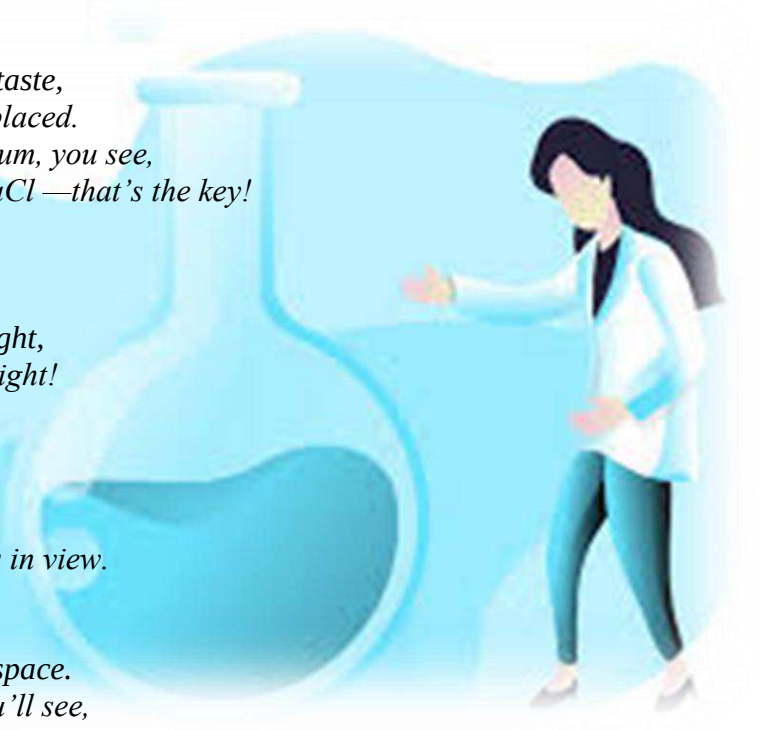

Here's a tricky one, we're getting near,
A colorless liquid, but crucial, my dear.
It powers our bodies, with energy so bright,
It's Glucose , the sugar we use to take flight!

Finally, the last clue, a secret is clear,
It bonds in a ring, with a smell so near.
Used in perfumes and fresh flowers too,
It's Benzene , a ring of six carbon atoms in view.

As a detective, you've cracked the case!
With elements and compounds in every space.
So next time you study, just look and you'll see,
That chemistry's magic is everywhere, and it's free!

OUR MOTHERLAND

By Luise Nandan Neog,Class V

The land of diversity,
Where people live in harmony.
Different cultures and customs,
And different castes and religions

Our history today tells us all,
About great leaders and
Freedom fighters sacrifice,
Who all were very wise.
Because they protested,
Our country is protected.

The Himalayas have worn a crown,
Giving birth to some of the greatest rivers,
As well as countless towns.
The atmosphere here is filled with serenity,
Creating a nature that is very pretty.

OUR TEACHER

By Prajwalita Bordoloi,Class VII

In a classroom bright with morning light,
A teacher shows her Spark so bright,
Which gentle words and knowing eyes, they helps us dream and reach the skies,
Each lesson pours like rain on seeds,
Nurturing hearts and minds with needs;
In their embrace, we learn and grow

MY FAMILY

By Ankus Goutam,Class IV

Families are big,
Families are small
They are different,
But we love them all
All have mothers,
All have fathers,
Some have sisters
And some have brothers
I love my family,
I love them all.

THE BOND

By Srutismritee Bhuyan, Class X

The day they met,
They starts with a quarrel.
It was a sign of being 'Them',
The first memory they made.
Staircases are too long,
Step by step it is developing,
They are too close to be one.
One cry, one console
One speaks, one listen.
If one is an artist, then other one is its paper.
Opposites attract each other,
But similarities are making them perfect.
It is not pencil and rubber;
It is pen and pencil.
When two powerful components
Are becoming one, then remember
History is repeating.
We again found it,
The pure,divine, and serene
Bond of Draupadi and Shree krishna..

My School My Pride!

By Niharika Gogoi,Class III

My school my pride!
Where we had a wonderful school ride!
We read, we write
And make our future bright!
We lought, we cry
We play, we study
With our best buddy!
We learnt to respect,
Not to neglect,
We learnt to accept
Not to expect.
Is the habit we learn
And that is why we call
My school my pride.

Whispers of Goodbye

By Hridoy Kishore Borah,Class X

In the quiet hours before we part,
I hold your memory close to heart.
Each word, a thread, each smile, a weave,
A tapestry of what we leave.

The road ahead, both vast and wide,
Calls us onward, side by side.
But soon our paths will gently veer,
And silence take the place of here.

Do not mourn what fades with time,
For echoes linger, soft, sublime.
Each shared glance and fleeting touch,
Will forever mean so much.

So take this moment, still and true,
And carry it as I'll carry you.
In every dawn, in every sky,
You'll live with me; this is not goodbye.

FRIENDS

By Rajdeep Baruah, Class VI

My friends are kind, my friends are sweet,
They make my days feel so complete.

We laugh, we play, we run around,
With them, so much joy is found.

When I feel sad, they're always near,
To wipe my tears and bring me cheer.

With friends, the world is bright and new,
I'm lucky to have a friend like you!
Through every moment, wrong or right,
My friends make life a pure delight.

ITS NEVER TOO LATE

By Ashapurna Gogoi,Class IX

It's never too late to start again, leave no room for regret, nor words unsaid
To rise from the ashes, to fix the broken,
To find the light within the storm, it's the same bright light, waiting.
To build a new path, even when it's hidden. You will be the one finding its way, uncovering the path, and no one else.

It's never too late to dream anew, to dream something you truly desire,

To chase the shining stars in the night, to rewrite your story, to chase the moonlit trails wherever it takes you.
To embrace the challenges, to start loving them with courage in view and nothing else.
No,
Don't go back, it's the same path where you had cried

For every moment holds the possibility of glory, of hope, of love.

It's never too late to heal your soul,
To forgive, to let go, to regain control,

To believe in yourself, your first step is your way to victory, no matter the past,
For the future is yours, and it comes fast.

Plan, heal, let go, let love alone remain and no enmity,

The world is full of negativity,
But why not choose to care, to share?

Why be sad when joy can lead,
To spread it wise, to make someone show teeth, to ease the pain.

Positivity invites you, with open arms,

A chance to build a world full of delight.
The choice is yours, to lift or to fall,
And remember, it's never too late to choose it all.

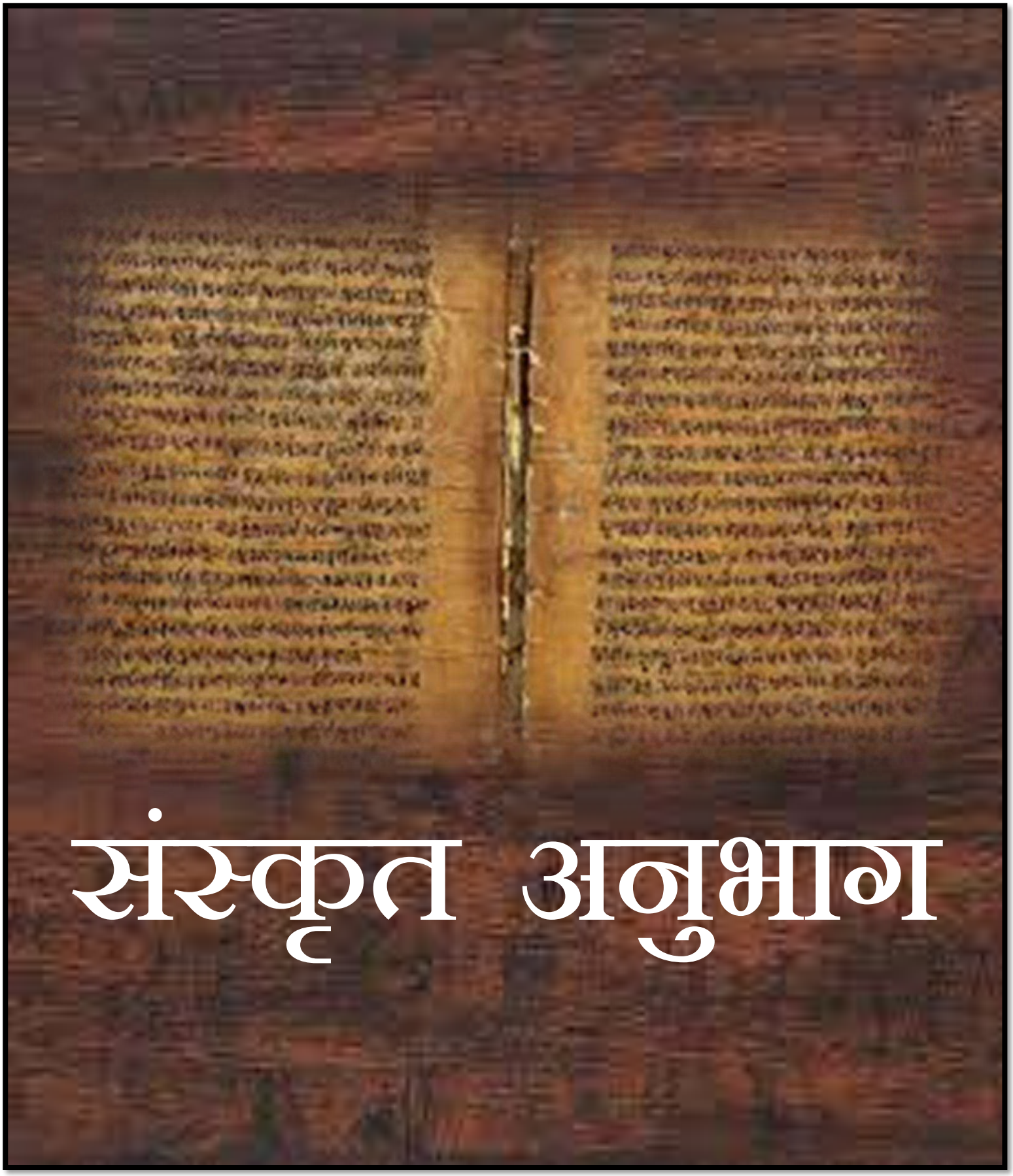

संस्कृत अनुभाग

भारतीय - शास्त्रीयसङ्गीतम्

■ आर्यश्री भराली, कक्षा VIII

शास्त्रीयसङ्गीतम् भारतीयसंस्कृतेः प्रमुखः भागः अस्ति । उत्तरभागे हिन्दुस्तानी इति नाम्ना दक्षिणे च कर्णाटिकेति नाम्ना मुख्यपरम्पराद्वयं वर्तते । हिन्दुस्तानीसङ्गीतस्य विशेषता अस्ति यत् आशुनिर्माणं , रागस्य अनेकपक्षाणाञ्च अन्वेषणं भवति । अत्र मुख्यरूपेण सितार - वीणा - सरोद - सारङ्गी - वायलिन इत्यादीनां वाद्ययन्त्राणां प्रयोगः प्रचलितः अस्ति । शास्त्रीयसङ्गीतस्य जालपुटमाध्यमेन श्रुत्वा जनाः गृहेषु प्रातः उत्थाय आनन्दमनुभवन्ति ।

कर्नाटकसङ्गीतस्य मुख्यलक्षणम् अस्ति लघुरचना । अस्य सङ्गीतस्य स्वरादयः तालादयाः प्रायशः संस्कृत - कन्नड़ - तेलगु - मलयालमादिभाषासु लिख्यन्ते उच्चार्यन्ते च ।

भारतीयसङ्गीतम् 6000 वर्षाधिकपुरातनमस्ति । यस्योत्पत्ति वैदिककाले मन्यते । अस्मिन् समये ध्रुपद - ताल - लय - धमाड़ - ख्याल - राग - ठाट - ठोम्डी इत्यादयः उपदिश्यन्ते स्म । इदानीम् अनेन विधिना चिकित्सा अपि आचर्यते, यः सङ्गीतचिकित्सा (Music therapy) इति नाम्ना जगति प्रसिद्धा अस्ति । मानसिकः तनावः , चिन्ता, कोमा , शिरोवेदनाइत्यादिषु कस्यामपि समस्यायां रोगिणं राहतं दातुम् अस्याः प्रयोगः कर्तुं शक्यते । यदा यदा अहं शास्त्रीयसङ्गीतं श्रृणोमि , अहं बहु - आनन्दम् अनुभवामि । देववर्गेषु गन्धर्वाः सन्ति ये दिव्यसङ्गीतकाराः सन्ति । गन्धर्वैः यत्सङ्गीतं वाद्यन्ते तत्तु गन्धर्वसङ्गीतम् इति कथ्यते । प्राचीनभारतीयसाहित्येषु यथा महाभारतादिषु ग्रन्थेषु अस्य सन्दर्भान् द्रष्टुं शक्यन्ते । भारतीयशास्त्रीयसङ्गीतस्य सप्तस्वराः सन्ति यथा सारेगामापाधानिसा । एते स्वराः सामूहिकरूपेण सप्तङ्कः सप्तकः वा इति नाम्ना ज्ञायते । भारतीयशास्त्रीयसङ्गीते एकः रागः मेघमल्हारः इत्यस्य आलेपेन अयं वर्षाकर्तुं समर्थोऽस्ति । भारतीयशास्त्रीयसङ्गीतस्य केचन प्रसिद्धाः कलाकाराः (अभिनेतारः) सन्ति यथा पंडितः विष्णुनारायणः , रविशंकरः, उस्ताद -विस्मिल्लाहखानः, जाकिरहुसैनः, लतामंगेशकरः, एमएस.सुबुलक्ष्मी , तानसेनादयः । अन्ते अहं वक्तुमिच्छामि यत् भारतीयशास्त्रीयसङ्गीतस्य सर्वदा अभ्यासः करणीयः आरोग्येण च जीवनं यापनीयः ।

अस्माकं असमप्रदेशः

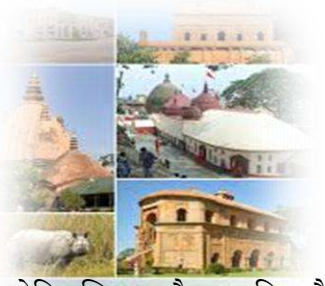

■ प्रिञ्चि प्रिया बोरा, कक्षा VIII

असमः भारतस्य एकः सुन्दरः प्रदेशः अस्ति । एषः स्वस्य सांस्कृतिकधरोहरैः ऐतिहासिकमहत्वैः प्राकृतिकसौन्दर्यैश्च प्रसिद्धः अस्ति । असमप्रदेशः देशे अस्य संस्कृतेः धर्मपरम्परायाश्च कृते प्रसिद्धः । अत्र बहूनि मन्दिराणि अपि सन्ति । तेषु कामाख्यामन्दिरम् अत्यधिकं प्रमुखस्थलम् अस्ति यत् देव्यै कामाख्यै समर्पितमस्ति । अत्र बिहुनामकः (सस्याधारितः त्यौहारः) त्यौहारः अपि वर्षे वारत्रयम् आचर्यते। असमः सप्तभगिनीषु अन्यतमः अस्ति । असमस्य शिक्षा-विज्ञानेपि अग्रगामी अस्ति। असमे स्थितः अत्रत्यः बहुप्रसिद्धः विश्वविद्यालयः भारतीय -प्रौद्योगिकी-संस्थानम्, गुवाहटी चापि अस्ति । असमप्रदेशस्य प्रकृतिः वातावरणञ्च अत्यन्तमनोहरम् अस्ति । औद्योगिकक्षेत्रेषु अपि असमराज्यः अग्रगामी यथा अत्र पेट्रोलोत्पादनादिकार्याणां विकासोऽपि द्रुतगत्या प्रचलन्नस्ति । तेनेव अस्य गणना पेट्रोलियम - उत्पादकराज्येषु प्राथम्येन भवति। अहम् आनन्दमनुभवामि यदहम् अस्य राज्ये निवसामि । अयं सर्वदा अग्रे भवेत् सुखशाली च भवेत्।

अस्पृश्यतानिवारणम्

■ पेट्रीसिया सोनॉवल, कक्षा VIII

अस्पृश्यता समाजस्य दुर्व्यवस्था अस्ति या अनादिकालात् एव विद्यमाना अस्ति। अस्याः कारणेन समाजे विभाजनं दृश्यते, येन स्नेहः, समानता च विनश्यतः। अस्मिन् आधुनिककाले सर्वे मनुष्याः समानाधिकारं प्राप्नुयुः इति विचारः सर्वत्र प्रसरति। अस्माकं शास्त्रेषु अपि "वसुधैव कुटुम्बकम्" इति सिद्धान्तः प्रतिपादितः अस्ति, यः सर्वेभ्यः समानतायाः संदेशं ददाति।भारतस्य संविधानकाराः अस्पृश्यतानिवारणाय विशेषं प्रयत्नं कृतवन्तः। सविधानस्य अनुच्छेदे १७ इत्यस्मिन् अस्पृश्यता पूर्णरूपेण निषिद्धा अस्ति। यदि कश्चन एतां रूढिं पालयति, तर्हि सः दण्डनीयः भविष्यति। समाजे एषः विचारः प्रसारयितव्यः यत् सर्वे मनुष्याः समानाः सन्ति, कोऽपि उच्चः नीचः वा नास्ति।विद्यालयेषु, मन्दिरेषु, सार्वजनिकस्थलेषु च सर्वे मिलित्वा कार्यं कुर्युः, अन्योन्यं सम्मानं ददतु इति अपेक्षा। यदि समाजे प्रेम, करुणा, बन्धुत्वं च वर्द्धन्ते, तर्हि अस्पृश्यता पूर्णतया नष्टं भविष्यति। अतः अस्माभिः एषः संकल्पः कर्तव्यः यत् अस्माकं समाजः समानाधारितः, न्याययुक्तः च भवतु।

युवाशक्तिः

■ अंजली , कक्षा IX

युवानां संकल्पशक्तिः
युवाजीवनं चिरंजीवितम्,
स्वप्नैः पूर्णं निर्मितं।
संकल्पे शक्तिं धारय,
धैर्येण पथं पश्य।

कठिनं मार्गं सह हर्षेण,
सफलता द्रष्टव्या सर्वदा।
विपत्तिं पश्य न दुश्चरितं,
स्वप्नसाध्यं भव सर्वदा।

महाकुम्भमेला

■ कस्तूरी बोरा, कक्षा VII

महाकुम्भमेला एक: अत्यन्त: महत्त्वपूर्ण: धार्मिक: सांस्कृतिकश्च समागम: अस्ति, य: भारतदेशे प्राचीनकालात् आयोज्यते। मेलायं प्रत्येकं द्वादशवर्षे महापर्व -रूपेण आयोज्यते, यत्र लक्षाधिका: श्रद्धालुजना: सर्वत: दिग्देशाद् आगच्छन्ति। महाकुम्भमेला भारतीयसंस्कृते: अद्वितीय: प्रतीक: अस्ति, यत्र धर्म -संस्कृति -आस्था -परंपराश्च एकत्रिता: सञ्जाता इत्यनुभूयते।

कुम्भमेला चतुर्षु -प्रमुख -स्थलेषु आयोज्यते – प्रयागराजे, हरिद्वारे, उज्जयिन्यां, नासिके च। यत्र गंगादिनदीनां पावनं सङ्गमं भवति। प्रत्येकं कुम्भमेलावसरे एकं विशेषं अवसरं भवति यस्मिन् पवित्रस्नानं, पुण्यलाभं, आत्मशुद्धिं च मनुष्य: कर्तुं शक्नोति। महाकुम्भमेला विशेषत: प्रयागराजे आयोज्यते यत्र गङ्गा, यमुनाद्वयं च समागच्छन्ति। कुम्भस्नानं कर्तुं लक्षाधिका: श्रद्धालुजना: त्यागं, परिश्रमं, दीर्घयात्रां च कृत्वा अत्र आगच्छन्ति।

महाकुम्भमेला धार्मिकदृष्ट्या अत्यन्तं महत्त्वपूर्णम् अस्ति। हिन्दूधर्मे गङ्गाजलस्य पवित्रता विशेषेण प्रतिष्ठिता अस्ति। य: कश्चित् श्रद्धालु: गङ्गायमुनासङ्गमे स्नानं कृत्वा पापक्षयं, आत्मशुद्धिं च प्राप्तुम् इच्छति, स: न केवलं धर्मम्, अपि तु मोक्षप्राप्तिं च साधयितुम् इच्छति। कुम्भस्नानं पापक्षयस्य, आत्मसंस्कारस्य, तथा इहलोक-परलोकसुखस्य प्रतीकम् अस्ति। इत्थं सर्वे श्रद्धालुजना: स्वधर्मे शुद्धिं प्राप्नुवन्ति, आस्थायुक्ता: सहभागीजना: हर्षं, शान्तिं च अनुभवन्ति।

महाकुम्भमेला केवलं एक: धार्मिक: अवसर: न अस्ति, अपि तु भारतीयसंस्कृति -परंपरा -आस्याया: च महोत्सव: अपि अस्ति। कुम्भमेला समग्रभारतवर्षस्य समाज -जाति-धर्म -संस्कृति -सम्प्रदायविविधतायाः पारस्परिकं भेदभावं अपाकृत्य एकतां च स्थापयति। कुम्भमेला केवलं सामाजिकसङ्गमम् इति न, अपि तु आत्मिकशुद्धिं , धर्मविचारं, आध्यात्मिकप्रवृत्तिं चापि प्रकटयति ।

अस्मिन् भक्तजना: साधुसंप्रदाय:, आचार्या:, योगिन: च एकत्रिता: सन्त: वेद-शास्त्राध्ययनं, प्रवचनं, धार्मिककर्मभि: च साधनां कुर्वन्ति। अत्र विविधधर्मसम्प्रदायजना: एकत्रिता: एक - उद्देश्याय परिश्रमन्ति। स उद्देश्य: अस्ति – आत्मशुद्धि:, मोक्षलाभ:, एवं च जीवने धर्मस्थापना। अत्र प्रत्येक: भक्त: प्राय: ध्यानमग्न:, साधनायुक्त:, समर्पित: च कार्ये संतुष्ट: अस्ति।

इतिहासदृष्ट्या महाकुम्भमेला भारतीयधर्मसिद्धान्तस्य एकं अद्वितीयं प्रदर्शकं अस्ति। गङ्गास्नानं, पुण्यकर्माणि, तथा तीर्थयात्रा इत्येषां धर्मशास्त्रेषु प्रमुखं स्थानं वर्तते। महाकुम्भमेला न केवलं भारतीयसमाजे, अपि तु सम्पूर्णवेद-धर्मादर्शे एकं स्थायित्वं स्थापयति।

कालिदासः – संस्कृतसाहित्यस्य गौरवम्

■ ऋतुराज, कक्षा IX

संस्कृतसाहित्ये यः कविः सर्वश्रेष्ठः इति स्वीकृतः अस्ति, स एव कालिदासः। सः केवलं कविः न, अपितु महाकविः, नाटककारः च आसीत्। तस्य काव्यं माधुर्यपूर्णं, रससंपन्नं च अस्ति। तस्य कृतिषु भारतीयसंस्कृतेः गूढं दर्शनं दृश्यते। संस्कृतभाषायाः सौन्दर्यं, अलङ्काराणां यथायोग्यं प्रयोगं, सरलतायाः माधुर्यं च तस्य रचनासु विशेषरूपेण दृश्यते। कालिदासस्य जन्मकालः, जन्मस्थानं च निश्चितरूपेण न ज्ञायते। कतिपय - विद्वांसः तम् चतुर्थ-षष्ठशतके स्थितं मन्यन्ते। कतिचन तम् उज्जयिन्याम्, अन्ये तु विदिशायाम् जातं मन्यन्ते। किंतु एते विवादाः तस्य साहित्यस्य महत्त्वं न हीयन्ते। तस्य लेखनी काव्यस्य दिव्यत्वं स्पर्शयति।

कालिदासः महाकाव्यानि, नाटकानि, खण्डकाव्यानि च विरचितवान्। तस्य प्रमुख महाकाव्येषु रघुवंशम्, कुमारसंभवम् च स्तः। रघुवंशे इक्ष्वाकुवंशस्य गौरवं वर्ण्यते, कुमारसंभवे पार्वती-शिवयोः कथा वर्तते। तस्य प्रसिद्धानि नाटकानि अभिज्ञानशाकुन्तलम्, विक्रमोर्वशीयम्, मालविकाग्निमित्रम् च सन्ति। अभिज्ञानशाकुन्तलम् तु संस्कृतनाटकेषु सर्वश्रेष्ठं मन्यते। तस्य खण्डकाव्येषु मेघदूतम् विशेषं प्रसिद्धम् अस्ति, यत्र निर्वासितस्य यक्षस्य विरहव्यथा मेघस्य माध्यमेन प्रकटिता अस्ति।

कालिदासस्य भाषा सरलता-गाम्भीर्य-युक्ता अस्ति। सः प्रकृतेः सौन्दर्यं अनुपमेन शैलीना वर्णयति। तस्य स्तुत्या हिमालयः देवतासदनं इति प्रतिभासते, गङ्गा स्वर्गात् पतन्तीव दृश्यते, वर्षारात्रिः प्रेमपूर्णा भवति, वसन्तः उत्सवाय आविर्भवति।

कालिदासः भारतीयसंस्कृतेः अमूल्यं रत्नम्। तस्य काव्यानि केवलं साहित्यस्य नूतनं युगं न दर्शयन्ति, अपितु मानवहृदयेषु प्रेमं, करुणां, संवेदनां च जाग्रयन्ति। अतः कालिदासः न केवलं संस्कृतसाहित्यस्य, अपितु सम्पूर्णस्य विश्वसाहित्यस्य गौरवः अस्ति।

व्यक्तित्वम्

■ रिचिता नेओग , कक्षा VII

व्यक्तित्वं केवलं व्यवहारस्य विषये एव नास्ति, अपितु व्यक्तेः परिचयः, धारणा च अस्ति।

कस्यचित् व्यक्तेः शैक्षणिककौशलं कियत् अपि उत्तमं भवतु, कियत् अपि सुन्दरं भवतु, यदि तेषां सत् व्यक्तित्वं नास्ति तर्हि तस्य कोऽपि उपयोगः नास्ति। सद्व्यक्तित्वं देवस्य आशीर्वादः इव भवति। दयालु - क्षमा -धैर्य -आज्ञाकारी, अनुशासन -निष्ठादयः अस्य परिचयः।

सुन्दरः स्वभावः इदं मनुष्यस्य सर्वाधिकं शक्तिशाली वस्तु भवति ।यथा वयं जानीमः श्रवणकौशलयुक्तस्य व्यक्तेः (मौमश्रवणस्य) मूल्यं वक्तृ -कौशलयुक्तस्य (वाचालस्य) अपेक्षया अधिकं भवति। वयम् इदानीं अवगन्तुं शक्नुमः यत् कस्यचित् व्यक्तित्वं कियत् महत्त्वपूर्णम् अस्ति, यदि वयं प्रयत्नशीलाः स्मः तर्हि वयं अस्माकं दुष्टाभ्यासान् सद्रूपेण परिवर्तयितुं शक्नुमः।

सुन्दरं व्यक्तित्वं प्रथमं सुन्दरतमं वस्तु भवति ।

कारणं मम संस्कृतानुरागस्य

■ राजदीपः बरुआ , कक्षा vi

मम संस्कृतस्य प्रेम्णः अनन्तकारणानि सन्ति। एषा भाषा प्राचीनतया समृद्धा अस्ति, यत्र महान् व्याकरणकारः पाणिनिः अस्ति। संस्कृतस्य व्याकरणं वैज्ञानिकं च अद्भुतं च अस्ति, यत् तस्य सौन्दर्यम् एवं सुगमत्वं पौराणिकानां ऋषीणां बुद्धिमता च परिलक्षितं अस्ति। संस्कृतभाषायां श्लोकाः, काव्यानि, महाकाव्यानि च विपुलतया सन्ति, यानि मानवचेतसः अमूल्यं धरोहरं प्रददति। एतत् भाषा केवलं प्राचीन ज्ञानस्य विपुलतां नः दर्शयति अपि तु आत्मनः चित्तशुद्धिं, धारणा, मेधा च वर्धयति। संस्कृतस्य अध्ययनं भारतीयसंस्कृतेः मूलं अस्ति, यत्र वेदाः, उपनिषदः, महाभारतम्, रामायणम् इत्यादयः ग्रन्थाः लिखिताः सन्ति। एतत् भाषा अध्ययनात् केवलं बुद्धिवर्धनं न भवति अपि तु आत्मनः संस्कारं, शीलं च परिष्कृतं भवति।

संस्कृतं भाषा एव न, अपितु भारतीय जीवनस्य अष्टाध्यायी अस्ति। संस्कृतभाषायां अद्यापि तानि मंगलमयानि मन्त्राः पठ्यन्ते, यानि मानवस्य जीवनस्य सर्वभागेषु आवश्यकानि मान्यन्ते। अतः, संस्कृतस्य अध्ययनं केवलं प्राचीन पाण्डित्यं न, अपि तु आधुनिक जीवनस्य सुधाराय मार्गदर्शकम् अपि अस्ति। अतः अहम् संस्कृतं भाषां प्रीयामि। एषा भाषा मम अन्तःकरणे विशिष्टं स्थानं धारयति।

मम संस्कृतस्य प्रेमा केवलं प्राचीनातिहासिकानां रत्नानां हेतु अस्ति। अहं संस्कृतं भाषां प्रीयामि यत् एषा अस्माकं संस्कृतेः आत्मा अस्ति, यत्र भारतस्य गौरवः संचारति। संस्कृतस्य अध्ययनं चित्तशुद्धिं, श्रद्धां, तत्तत्त्वज्ञानेन च समृद्धिं नः प्रददति। एषा भाषा मम आत्मनः प्रेमपर्णं प्रेरणास्त्रोतं अस्ति।

महात्मा गांधीः — अहिंसायाः सन्देशवाहकः

■ ऋतुराज , कक्षा IX

मोहनदास करमचन्द गांधीः, यः महात्मा गांधी इति ससन्मानं प्रसिद्धः, भारतीयस्वतन्त्रतायाः इतिहासे एकं उज्ज्वलं दीपः आसीत्। सः केवलं स्वतंत्रतासङ्घर्षस्य अग्रदूतः न आसीत्, अपितु सत्यस्य, अहिंसायाः च एकः अद्वितीयः उपदेशकः। तस्य जीवनं त्यागस्य, सरलतायाः, च दृढसङ्कल्पस्य आदर्शं दर्शयति।गांधी २ अक्टूबर १८६९ तमे दिवसे गुजरातस्य पोरबन्दरनगरे जातः। बाल्यकालात् एव सः सत्यप्रियः आसीत्। विदेशे विध्यां सम्पाद्य अपि सः स्वदेशस्य सेवा हेतुं आत्मानं समर्पितवान्। ब्रिटिशराज्यस्य अत्याचाराणां विरुद्धं सः सत्याग्रहं च अहिंसां च अस्त्ररूपेण स्वीकृतवान्। तेन भारतवासिनः आत्मबलस्य महत्त्वं अवबोधिताः, स्वराज्यस्य मार्गे नवे उत्साहेन अग्रे गताः।महात्मनः नेतृत्वे भारतम् १५ अगस्त १९४७ तमे दिवसे स्वाधीनताम् प्राप्तवान्। तथापि सः स्वप्रयत्नस्य फलं दीर्घकालं न अनुभवितुं शक्तवान्। ३० जनवरी १९४८ तमे दिवसे एकेन हिंसकहस्तेन तस्य जीवनस्य अन्तः अभवत्। किन्तु तस्य सन्देशः – "अहिंसा परमो धर्मः" – अद्यापि समग्रे जगति प्रतिध्वनिते।महात्मा गांधीः केवलं भारतस्य नेता न आसीत्, अपितु समग्रस्य विश्वस्य प्रेरणास्रोतः। सः दर्शितवान् यत् बलं शस्त्रेण न, अपितु प्रेमेण, करुणया च लभ्यते। तस्य जीवनचर्या अस्मान् शिक्षयति यत् सत्यस्य मार्गः कठिनः स्यात्, किन्तु सः एव विजयाय मार्गं दर्शयति।महात्मा गांधी इत्यस्य जीवनं यथार्थं प्रेरणामयम् अस्ति। तस्य अहिंसायाः, सत्यस्य च सिद्धान्ताः न केवलं इतिहासे लिखिताः, अपितु अद्यापि अस्माकं जीवनं मार्गदर्शकं कुर्वन्ति। अतः सः यावत् कालं जगति स्मृतः भविष्यति, तावत् कालं तस्य सन्देशाः अस्मान् प्रकाशयिष्यन्ति।

■ आयुष माधव, कक्षा VII

क्रिस्टियानो रोनाल्डोः अस्ति, आसीत्, च भविष्यति च विश्वे श्रेष्ठतमः क्रीडापटुः। तस्य जीवनयात्रा एकं प्रेरणादायकं च अद्वितीयं च मार्गं प्रतिनिधित्वं करोति। निर्धनपरिवारस्य सदस्यः इति सरलात् प्रारम्भं कृत्वा, रोनाल्डोः आत्मश्रमेण, तपसा, च अद्वितीयेन सामर्थ्येन फुटबॉलक्रीडायाः उच्चतमं स्थानं प्राप्तवान्। तस्य कठिनप्रयत्नेन, दृढसङ्कल्पेन च सः सर्वदा विजयमार्गं अनुसृतवान्।

प्रारम्भिकजीवनम्

क्रिस्टियानो रोनाल्डोः ५ फेब्रुवरी १९८५ तमे दिने पुर्तगाले मदीरा प्रदेशे फंचल नगरे जातः। तस्य परिवारः दरिद्रः आसीत्। तस्य पिता जोसे डिनिस् एवेरो उद्यानकर्मी आसीत्, मातरं मारिया डोलोरेस् अन्नपाका आसीत्। गृहस्य आर्थिकदुर्बलतायामपि रोनाल्डोः बाल्यकालात् एव फुटबॉलक्रीडायाम् असक्तः आसीत्।

८ वर्षवयः अण्डोरीन्हा नामकं स्थानीयं क्लबं प्राप्य तेन प्रतिभां प्रदर्शितवान्। १२ वर्षे सः स्पोर्टिंग सीपी नामकं प्रसिद्धं क्लबं प्रवेश्य अधिकं प्रशिक्षणं प्राप्तवान्। तत्र सः असाधारणं कौशलं दर्शयन् शीघ्रं सर्वेषां मनसि प्रतिष्ठां प्राप्तवान्।

स्पोर्टिंग सीपी मध्ये यशः

स्पोर्टिंग सीपी मध्ये रोनाल्डोः गति, कौशलं, च दृढकिक् इत्यादिभिः विशेषतः प्रसिद्धः अभवत्। १६ वर्षे सः प्रथमं वरिष्ठदले क्रीडायाः अवसरं प्राप्तवान्। तस्य असाधारणप्रदर्शनं मैनचेस्टर युनाइटेड नामकं इंग्लिश क्लबं आकृष्टवान्।

मैनचेस्टर युनाइटेड मध्ये उत्कर्षः

२००३ तमे वर्षे, रोनाल्डोः १८ वर्षवयः मैनचेस्टर युनाइटेड दलं प्रवेश्य तत्र स्वयम् विकसीतवान्। २००७-२००८ क्रीडासेझने तेन प्रीमियर लीग, यूईएफए चैंपियन्स लीग, च एफए कप नामानि प्रमुखखिताभानि जितानि। तेन २००८ तमे वर्षे प्रथमं Ballon d'Or पुरस्कारं प्राप्तम्।

रियल माद्रिदे स्वर्णयुगः

२००९ तमे वर्षे, रोनाल्डोः ९४ मिलियन यूरो मूल्ये रियल माद्रिद क्लबं गत्वा तत्र नवोत्कर्षम् अपश्यत्। तत्र ९ वर्षाणि क्रीडित्वा ४५० गोल्स ४३८ प्रतिस्पर्धायां प्राप्तवान्। यूईएफए चैंपियन्स लीग चतुर्वारं जित्वा सः क्लबस्य इतिहासे सर्वश्रेष्ठः गोलकर्ता अभवत्।

युवेंटस मध्ये नवः आरम्भः

२०१८ तमे वर्षे रोनाल्डोः युवेंटस नामकं इटालियन क्लबं गत्वा अपि तत्र उत्तमं प्रदर्शनं कृतवान्। तेन सीरी ए लिगे शीर्षस्थानं प्राप्य स्वक्रीडायाः कौशलं पुनः सिद्धं कृतम्।

पुर्तगालस्य गौरवम्

राष्ट्रीयस्तरे अपि रोनाल्डोः पुर्तगालस्य गौरवम् अभवत्। २०१६ तमे वर्षे यूरो कप, २०१९ तमे वर्षे नेशन्स लीग इत्यादीनि खिताभानि जितानि। तस्य नेतृत्वे पुर्तगालः अन्तर्राष्ट्रीयक्रीडायां महत्वपूर्णं स्थानं प्राप्तवान्।

सर्वश्रेष्ठक्रीडापटुः

क्रिस्टियानो रोनाल्डोः केवलं एकः क्रीडापटुः न, अपि तु एकः प्रेरणास्रोतः अस्ति। तस्य जीवनं दृढसङ्कल्पस्य, कठोरपरिश्रमस्य, च अपराजितसामर्थ्यस्य प्रमाणम् अस्ति। अद्यापि सः आत्मसमर्पणेन, उत्साहेन च नित्यं नवोन्नतिं लक्ष्यीकृत्य अग्रे गच्छति।

रोनाल्डोः अस्ति, आसीत्, च भविष्यति च विश्वे सर्वश्रेष्ठः क्रीडापटुः। तस्य जीवनं अस्मान् शिक्षयति यत् स्वप्नस्य सिद्धिः केवलं परिश्रमेण, निष्ठया, च अदम्यसाहसेन एव सम्भवति।

संस्कृत-श्लोका:

■ अभिज्ञान भारद्वाज , कक्षा VI

1.

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत् ॥
हिन्दी में अर्थ : "सभी सुखी हों, सभी निरोगी हों, सभी शुभ कार्यों को देखें, और किसी को भी दुःख का अनुभव न हो।"

2.

ॐ सह नाववतु, सह नौ भुनक्तु,
सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै॥
हिंदी में अर्थ :: "हम दोनों एक साथ अध्ययन करें, एक साथ भोजन करें, एक साथ परिश्रम करें। हमारे बीच कोई वैमनस्य न हो, और हम दोनों के ज्ञान में वृद्धि हो।"

3.

रामो विजयते,
रामं रमणं,
रामं देवकीनन्दनं,
रामं सच्चिदानन्दं,
रामं विश्वेश्वरं प्रभुम्॥
हिंदी में अर्थ ::"राम की जय हो, जो आनंद के देवता हैं, जो ब्रह्म रूप हैं, और जो सम्पूर्ण विश्व के भगवान हैं।"

4.

यस्य देवे परा भक्तिः यथा देवे तथा गुरौ।
तस्यैते किल सर्वे धार्मिकं सर्वमंगलं॥
हिंदी में अर्थ:: "जिस व्यक्ति की भगवान में परम श्रद्धा है, और उसी तरह उसके गुरु में भी श्रद्धा है, उसके जीवन में सभी धर्मिक कार्य और मंगलकारी घटनाएँ घटित होती हैं।"

5.

आत्मनं रथिनं विद्धि: शरीरं रथमेव तु।
बुद्धिं तु सारथिं विद्धि: मन: प्रग्रहमेव च॥
हिंदी में अर्थ :: तू इस शरीर को रथ जान और आत्मा को रथी यानि सवार मान । बुद्धि को सारथी और मन को लगाम जान।।"

6.

न हि देहभृता शक्यं त्यक्तुं कर्माणि सर्वशः।
यस्तु कर्मफलत्यागी स त्यागीत्यभिधीयते॥
हिंदी में अर्थ : "जो व्यक्ति संसारिक कर्मों का त्याग करता है और उनके फल को भी त्यागता है, उसे सच्चा त्यागी कहा जाता है।"

7.

सत्यमेव जयते नानृतं सत्येन पंथाः विततो देवयानः।
येनाक्ष्यम्प्राप्तं यशो धर्मं यशस्विनो युध्यन्ति॥
हिंदी में अर्थ:: "सत्य की ही जय होती है, असत्य की नहीं। सत्य से ही देवों का मार्ग प्रशस्त होता है और सत्य के द्वारा ही महान लोग विजय प्राप्त करते हैं।".

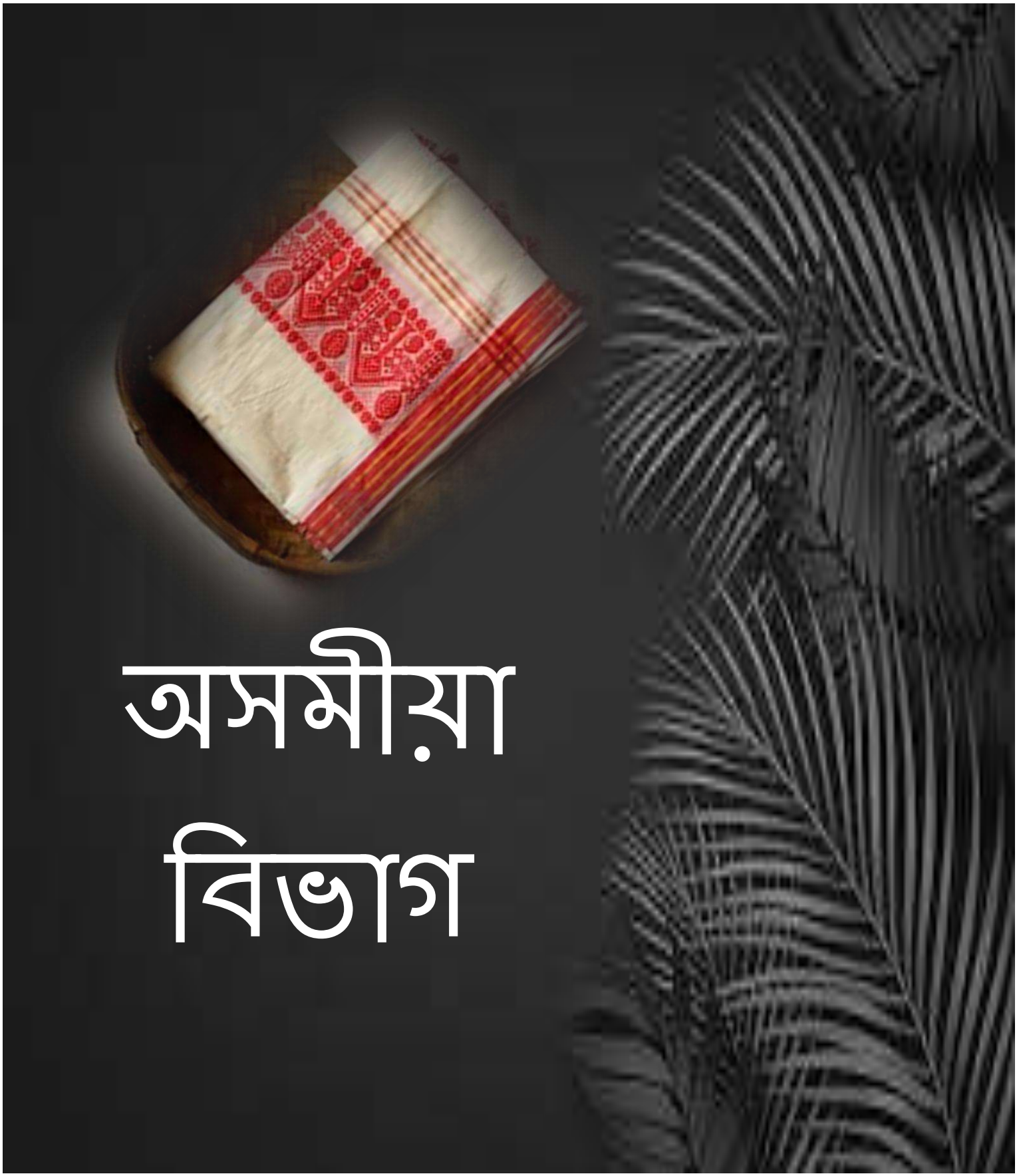

অসমীয়া বিভাগ

জাতীয় কৃষ্টি সংস্কৃতি

■ অভিলাষা সর্বানি, নৱম শ্রেণী

কোনো এটা জাতিৰ বৈশিষ্ট্যসূচক শিল্প-সাহিত্য, বিশ্বাস, সমাজনীতি, ধর্মীয় ৰীতি-নীতি, কৃষি, কর্ম, শিক্ষা, চর্চা, কলা, ৰুচি আদিৰ সমাৱেশক একেলগে সেই জাতিৰ কৃষ্টি বা সংস্কৃতি বুলিব পাৰি।

সভ্যতাৰ পথটো কৃষ্টিয়েই গঢ়িছে। কৃষ্টি শব্দটো 'কৃষ' ধাতু 'ক্তি' প্রত্যয়ৰ সংযোগত সৃষ্টি হৈছে। ইয়াৰ অর্থ হৈছে ভূমিৰ লগত কর্ষণ। কিন্তু ই কেৱল ভূমিৰ লগত কর্ষণতেই আৱদ্ধ নহয়, বস্তুজগতৰ লগত কৰি থকা কার্যসমূহকো সামৰি লয়। কৃষ্টিৰ সংস্কাৰেই হৈছে সংস্কৃতি।ড. নবীন চন্দ্র শর্মাৰ মতে "একেটা ক্রিয়াৰ বাৰম্বাৰ আচৰণ বা আবৃত্তিক কর্ষণ বা কৃষ্টি আখ্যা দিব পাৰি; আৰু এই কৃষ্টিক সংস্কাৰ কৰি লোৱাটোৰ নামেই সংস্কৃতি।"

সংস্কৃতি হল একোখন সমাজৰ প্রতিজন সদস্যৰ আচৰণ, যোগ্যতা, জ্ঞান, বিশ্বাস, শিল্পকলা, নীতি, আদর্শ, আইন, প্রথা ইত্যাদিৰ এক যৌগিক সমন্বয়।সংস্কৃতিয়ে সমাজৰ সভ্যতাকে নির্ধাৰণ কৰে। সংস্কৃতি পৰিবর্তনশীল। লোকসংস্কৃতি সাধাৰণ মানুহৰ মুখে মুখে, অথবা তেওঁলোকৰ চিন্তা বা কর্মৰ জৰিয়তে গঢ়ি উঠে। সংস্কৃতিৰ লগত সততে জড়িত হৈ থাকে এখন সমাজ আৰু সেই সমাজখনৰ অংগীভূত সদস্যৰূপে মানুহে আহৰণ কৰা জ্ঞান, বিশ্বাস, কলা, ৰীতি-নীতি, আচাৰ-ব্যৱহাৰ, উৎসৱ-অনুষ্ঠান, আইন-কানুন, নৈতিকতা, অভ্যাস আৰু অন্যান্য সামাজিক উপাদানসমূহ। মানুহৰ জীৱন-ধাৰণৰ পৰিৱর্তনৰ লগে লগে সংস্কৃতিৰ ধাৰণাৰো পৰিৱর্তন হৈ আহিছে। মানুহে আদিম অৱস্থাৰ পৰা সভ্য অৱস্থালৈ আহোতে সময়ৰ লগত খাপ খুৱাই জীৱন-যাপনৰ বাবে নিত্য নতুন আহিলা-পাতিৰ আশ্রয় ল'ব লগা হ'ল। ইয়াৰ বাবে মানুহে এক নতুন কৃত্রিম সাংস্কৃতিক পৰিৱেশৰো সৃষ্টি কৰি ল'ব লগা হ'ল। এটা সময়ত সেই সকলোবোৰেই মানৱ জীৱনৰ নিত্য ব্যৱহৃত সামগ্রীত পৰিণত হৈ পৰিল। গতিকে এই ফালৰ পৰা ক'ব পাৰি ..যি বিলাকত প্রকৃতিৰ প্রেৰণা থাকিলেও কেৱল প্রাকৃতিক নিয়মত হোৱা নাই, কিন্তু মানুহে নিজৰ শৰীৰ আৰু মনৰ বিকাশৰ বাবে, সমাজৰ কল্যাণৰ অর্থে সৃষ্টি কৰি লৈছে আৰু মানি লৈ তাক বিকাশ সাধন কৰিছে সেয়ে হ'ল সংস্কৃতি।

বিশ্বনাৰায়ন শাস্ত্রীৰ মতে,

"কৃষ্টি হ'ল এটা জাতিয়ে কৰা সকলো কামৰে সমষ্টি আৰু সংস্কৃতি হ'ল সেই জাতিৰ চিন্তা, কল্পনা আৰু কামৰ শ্রেষ্ঠ অংশখিনি। ইয়াৰ প্রভাৱ জাতিৰ মনত থাকি যায়। সেই প্রভাৱে জাতিৰ জাতীয় আদর্শ গঢ় দিয়ে, কামত অনুপ্রেৰণা দিয়ে।"

পৰীক্ষা লৈ ভয়

■ প্ৰিয়ালক্ষ্মী কলিতা, একাদশ শ্ৰেণী

সাম্প্ৰতিক সময় বিশ্বায়নৰ সময় । সমগ্ৰ পৃথিবী আজি প্ৰতিযোগিতাৰে ভৰপূৰ ।সেয়েহে ছাত্ৰ-ছাত্ৰীৰ সকলে অধিক কষ্ট কৰি পৰীক্ষাত অৱতীৰ্ণ হ'ব লগীয়া হয়।পৰীক্ষাৰ সময়ত ছাত্ৰ-ছাত্ৰীৰ ওপৰত মানসিকভাৱে যথেষ্ট হেঁচা পৰে । এই সময়ছোৱাত ছাত্ৰ-ছাত্ৰীসকল পৰীক্ষাৰ প্ৰস্তুতিত ব্যস্ত হৈ পৰে।কিন্তু পৰীক্ষা শেষ হোৱাৰ পিচত ছাত্ৰ-ছাত্ৰীসকলে মানসিক চাপত ভুগি থাকে যে কেনেধৰনৰ ফলাফল আহিব,আশা কৰা ধৰনে পৰীক্ষাত নম্বৰ লাভ কৰিব পাৰিবনে নাই ইত্যাদি এই মানসিক চাপে শিশুসকলৰ ওপৰত আধিপত্য বিস্তাৰ কৰে।পৰীক্ষাৰ চাপে ছাত্ৰ-ছাত্ৰী মানসিক স্বাস্থ্যৰ ওপৰত যথেষ্ট প্ৰভাৱ পেলাব পাৰে।ইয়াৰ ফলত উত্তেজনা,হতাশা আৰু অন্যান্য আবেগিক সমস্যাৰ সৃষ্টি হ'ব পাৰে। পৰীক্ষাৰ সময়ত ছাত্ৰ-ছাত্ৰীসকলে সন্মুখীন হোৱা মানসিক চাপৰ আঁৰৰ বিভিন্ন কাৰন হ'ল আত্মসন্মান কম হোৱা,ছ'চিয়েল মিডিয়াত অত্যধিক সময় কটোৱা,দীৰ্ঘদিনীয়া বিলম্ব,অসামঞ্জস্যতা,সময় পৰিচালনাৰ দক্ষতা কম হোৱা,সমনীয়াৰ নেতিবাচকতা,অভিভাৱক ৰ অস্বাস্থ্যকৰ তুলনা।আটাইতকৈ গুৰুত্বপূৰ্ণ কাৰনটো হ'ল সময় ব্যৱস্থাপনাৰ দক্ষতা।সময় পৰীচালনা কৰিব নোৱাৰা ছাত্ৰ-ছাত্ৰীসকলৰ তুলনাত যিজনে সময়ক ফলপ্ৰসূভাবে পৰীচালনা কৰিব তেওঁ কম মানসিক চাপৰ সন্মুখীন হয়।মানসিক চাপ ব্যৱস্হাপনাৰ গুৰুত্বপূৰ্ন কৌশলসমূহ হ'ল সঠিক সময় ব্যৱস্হাপনা,মনক শান্ত কৰিবলৈ যোগাসন আৰু ধ্যান কৰা দৈনিক তালিকা ইত্যাদি।বেছিভাগ ছাত্ৰই তেওঁলোকক আৰম্ভ কৰিবলৈ কোনোবা ধৰনৰ প্ৰেৰণালৈ অপেক্ষা কৰে।কিন্তু সত্যটো হ'ল প্ৰেৰণালৈ অপেক্ষা কৰাটো অসাৰ কাৰন কাস আৰম্ভ নকৰালৈকে আপুনি প্ৰেৰণা নাপাব।

হাজাৰ মাইলৰ যাত্ৰা আৰম্ভ হয় এটা খোজৰ পৰা।সেই এটা খোজ ছাত্ৰজনে ল'ব লাগিব আৰু সেয়া হ'ল শেয় মুহূৰ্তত নকৰি পূৱৰ পৰা দৈনিক পঢ়া আৰম্ভ কৰাৰ।

হঠাতে

■ শ্রী অনন্যা বৰুৱা , নৱম শ্রেণী

পদুলিতে খিয় হৈ অমৰে কাৰোবলৈ ৰৈ আছে, বহুপৰ অপেক্ষা কৰি থকাৰ সত্ত্বেও আজি কিন্তু সি আমনি অনুভৱো কৰো নাই। সেই পূৱা যেন সি আগতে পোৱাই নাই। চাৰিওফালে প্ৰকৃতিৰ এক মনোমোহা সৌন্দৰ্য সি অলপ বেছিকৈহে অনুভৱ কৰিছে। সেই ফুলৰ সুগন্ধ, চৰাই চিৰিকটিৰ কোলাহলৰ স্বৰ যদিও সুবলা সেই বলি থকা বতাহজাকে যেন অমৰক এক বিপুল আনন্দ উপহাৰ দিছে।

"অমৰ যাওঁ ব'ল, আজি অলপ পলম হ'ল, তই বহুত দেৰি ৰৈ আছ নেকি?" বুলি ঋতুৱে পিছফালৰ পৰা মাত লগালে। অমৰে কিন্তু একো উত্তৰ নিদিলে, যেন সি এল্পনা ৰাজ্যৰ মাজভাগতহে উপস্থিত হৈছেগৈ। দুয়ো একেলগে টিউচনলৈ গৈছে। অমৰে আজি ঋতুৰ পলম হোৱাৰ বাবেই শৰতৰ আৰম্ভণিৰ মনোমোহা পুৱাৰ প্ৰাকৃতিক সৌন্দৰ্য হিয়া ভৰি যোৱাকৈ উপভোগৰ সুবিধা পালে। বাটত দুয়োৰে মাজত এই কেইদিনৰ স্কুলৰ ঘটনাবোৰৰ বিষয়েই কথা-বাৰ্তা চলিল। সিহঁত নৱম শ্রেণীৰ ছাত্ৰ। অমৰৰ দেউতাকে ঘৰৰে বাৰীত দুই এক পাচলিৰ যেতি কৰে আৰু গৰু-ছাগলী, হাঁহ-কুকুৰা আদি পোহাৰ লগতে ভোবোলা এটাও পোহে। কিন্তু পৰিয়ালটো ডাঙৰ হোৱাৰ বাবে অমৰ আৰু ভায়েক দুটাক পঢ়োঁৱাই-শুনোৱাই পৰিয়াল চলাবলৈ অলপ অসুবিধা হয় যদিও তেওঁলোকৰ জীৱন এনেদৰেই চলি আছে। ঋতুৰ ঘৰৰ অবস্থা অলপ অমৰতকৈ ভাল। দেউতাকে ওচৰৰে স্কুল এখনত কেৰাণীৰ কাম কৰে। সকলো পিতৃ-মাতৃৰে সন্তানক লৈ বহুতো আশা থকাৰ দৰে অমৰৰ দেউতাকেও তাৰ মেট্ৰক পৰীক্ষাত ভালফলাফল এটাৰেই আশা কৰিছে আৰু কষ্টৰ ধন কেইটাৰে এসাজ ভাত কম খাই হ'লেও তাক টিউচন এটা দিছে। ল'ৰাটোও পঢ়াত বৰ বেয়া নহয়। দেউতাকৰ কষ্ট সি বুজি পায়। সেয়েহে সি দেউতাকে বেয়া পোৱা কামবোৰ কৰিবলৈ ভাল নাপায়। ঋতুৱেও ঘৰত দেউতাক নাথাকিলে ঘৰৰ ইটো সিটো কাম কৰে। "সঁচাকৈয়ে আজি এই প্ৰাকৃতিক সৌন্দৰ্যই মনটো ভাল লগাই দিলে।" অমৰে ক'লে, ঋতুৱেও হয় বুলিয়েই ক'লে। এনেদৰে গৈ থাকোঁতে হঠাৎ ঋতুৰ কিবা মনত পৰিল, সি দেখুৱাব নিবিচাৰিলেও আনন্দৰ এক হাঁহি তাৰ মুখমণ্ডলত জিলিকি উঠিল। যদিও সি ক'ব বিচৰা নাছিল, কিন্তু অমৰে কথাটোনো কি তাৰ উমান পাবলৈ আৰু বাকী নাথাকিল। কিন্তু সি সোধাৰকোনো প্ৰয়োজনবোধ নকৰিলে। টিউচনৰ পৰা উভতি আহোতে অমৰে সুধিলত ঋতুৱে ক'লে, "আজি আকৌ লগ পাম।"

সময় প্ৰায় ৮ মান বাজিল। দুয়ো বন্ধু ল'ৰালৰিকৈ স্কুললৈ গ'ল। অমৰৰ দেউতাক আজি হাটলৈ যাব। বাৰীৰ পৰা পাচলি অলপ আনি গৰু গাইবোৰ এৰাল দি শেষত ভোবোলা ছাগলিটো বাৰীতে বান্ধি থৈ আহিবলৈ গ'ল। তেওঁ মনতে ভাবি গৈছিল যে আজি যদি বস্তুকেইটা ভাল দামত বেচিব পাৰে তেতিয়া অমৰৰ ক্লাছৰ টকাকেইটাকে দিব পাৰিব। খুঁটিটো মাৰোঁতেই ভোবোলাটোৱে অমৰৰ দেউতাকক হঠাতে আঁজুৰি লৈ গ'ল। বাৰীৰ কাষতে পৰি একা বৈদ্যুতিক তাঁৰ এডালত তেওঁৰ বুকুৰে স্পৰ্শ কৰিলে আৰু চিৰকালৰ বাবে চকু মুদিলে। গাঁৱত কেউপিনে খবৰটো বিয়পি পৰিল। ঘৰত সকলোৰে চকুলো বৈ গৈছে। এক শোকাকুল পৰিৱেশ। কম সময়ৰ ভিতৰতে তেওঁলোকৰ ঘৰত বহুত মানুহ গোট খাইছেহি। অমৰেও স্কুলৰ পৰা আহি পাইছেহি। আৰু তেওঁলোকৰ মাজৰ পৰা অমবৰ ভায়েকহঁতৰ মুখৰ পৰা কেৱল এটা স্বৰহে ভাহি আহিছিল। "ঈশ্বৰে আমাৰ লগতহে এনে কিয় কৰিলে।' অমৰে যেন কান্দিবলৈ পাহৰি গ'ল।

এনেতে কাৰোবাৰ মুখৰ পৰা যেন ডাঙৰকৈ শব্দ ভাহি আহিছিল, "অমৰ, কি হ'ল আজি শুয়েই থাকিবি নেকি। উঠ সোনকালে।" হঠাতে ডাঙৰকৈ তাক মতাৰ শব্দ শুনি সি উচপ খাই গ'ল, কিন্তু সি যে এটা সপোনহে দেখি আছিল বিশ্বাস কৰিবলৈ অলপ টান পালে।

সপোনৰ আন এটা নাম দেউতা

■ শ্ৰী অনন্যা বৰুৱা , নৱম শ্ৰেণী

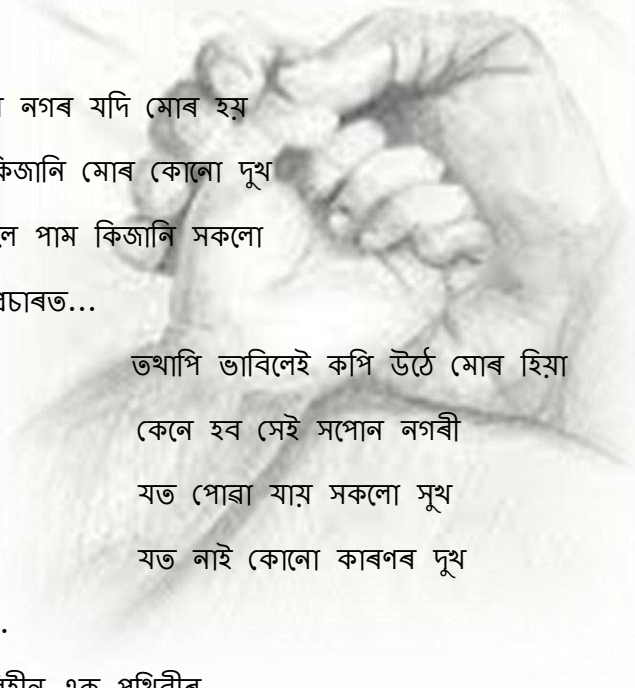

সপোনৰ নগৰ যদি মোৰ হয়
নহব কিজানি মোৰ কোনো দুখ
বিছাৰিলে পাম কিজানি সকলো
চকুৰ প্ৰচাৰত...

তথাপি ভাবিলেই কপি উঠে মোৰ হিয়া
কেনে হব সেই সপোন নগৰী
যত পোৱা যায় সকলো সুখ
যত নাই কোনো কাৰণৰ দুখ

কিন্তু....
তুমি বিহীন এক পৃথিৱীৰ
আছে জানো কোনো মূল
তোমাৰ লগত নাই কাৰো তুলনা
দেউতা, তুমিয়েই মোৰ সকলো।

মোৰ বেষ্ট ফ্ৰেণ্ড

■ চন্দ্ৰমল্লিকা ফুকন,সপ্তম শ্ৰেণী

মোৰ বেষ্ট ফ্ৰেণ্ড দয়ালু , সঁচা আৰু মৰমীয়াল
আমি একেলগে খেলো, মই আৰু তুমি।
আমি হাঁহো , ধেমালি কৰোঁ, আৰু কিছু মজা কৰোঁ,

চিৰদিনৰ বাবে একেলগে, উজ্জ্বল সূৰ্য্যৰ তলত।
হালধীয়া, কমলা আৰু ৰঙা ৰশ্মিৰ সৈতে,

আমাৰ দিনটো পোহৰাই তোলে, আৰু মনটো ভৰাই দিয়ে।

নিথৰ ৰাতিৰ জোনাক

■ সংযুক্তা পৰাশৰ, অষ্টম শ্ৰেণী

নিথৰ ৰাতিৰ নিৰ্জনতাত,
নিষ্প্ৰাণ হৈ শব্দ থমকি ৰয়।
নিসংগ বতাহ জোনাক বিসৰ্জন,
তৰাই সুধে সুৱলা প্ৰশ্ন।
নিস্তব্ধতাৰ গভীৰ হুমুনিয়াহত,
সপোনবোৰো মিচিকিয়াই ৰয়।

हमारी पहचान: अख़बारों में हमारा विद्यालय

क्षेत्रीय खेल स्पर्द्धाओं में चमके केवि आरआरएल के छात्र
प्राचार्य ने किया छात्रों का सम्मान

छाया : पूर्वोदय

जोरहाट, 21 अगस्त (पू.सं.)। केन्द्रीय विद्यालय आरआरएल जोरहाट के छात्रों ने केवीएस क्षेत्रीय खेल प्रतियोगिता मे उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। विद्यालय के शारीरिक शिक्षा अध्यापक ईजीत सिंह की देखरेख एवं प्राचार्य डॉ. केके मोटला के मार्गदर्शन एवं प्रेरणा से अंडर-14 लड़कियों की तैराकी में कक्षा आठवीं की निवृति प्रियम दत्त ने तीन स्वर्ण पदक, शॉट पुट में प्रियांकु दास ने स्वर्ण पदक और टेबल टेनिस में प्रियांशु हजारिका ने कांस्य पदक अपने नाम किया।

ज्ञात हो कि निवृति प्रियम दत्त असम स्टेट एक्वाटिक चैंपियनशिप में 2 स्वर्ण, 1 रजत एवं 1 कांस्य पदक भी झटक चुकी है। हाल में उसने राष्ट्रीय स्तर पर होने वाली स्विमिंग प्रतियोगिताओं में असम राज्य का प्रतिनिधित्व भी किया। इसके अतिरिक्त कक्षा दसवीं के सोहम मुखर्जी ने अंडर-17 बैडमिंटन में चौथा स्थान प्राप्त किया और राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिता के लिए चयनित हुए। विद्यालय के प्राचार्य डॉ. केके मोटला ने सभी प्रतिभागियों को मेडल देकर सम्मानित करते हुए उनकी अपार सफलता पर बधाई दी। साथ ही आगामी राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं के लिए शुभकामनाएं भी दीं।

केवि आरआरएल में छात्र अलंकरण समारोह संपन्न

छाया : पूर्वोदय

जोरहाट, 4 सितंबर (पू.सं.)। केंद्रीय विद्यालय आरआरएल जोरहाट में आज विद्यार्थी परिषद के छात्रों का अलंकरण समारोह आयोजित किया गया। इसके अंतर्गत विद्यालय के प्राचार्य डॉ. केके मोटला द्वारा छात्र परिषद् के सदस्यों को विद्यालय प्रबंधन के सुचारु रूप से संचालित करने हेतु पद्भार सौंपा गया, जिसका उद्देश्य छात्रों में नेतृत्व एवं सहभागिता को बढ़ावा देना है। अपने वक्तव्य में प्राचार्य ने चयनित

दैनिक पूर्वोदय

केवि आरआरएल में वन महोत्सव

छाया : पूर्वोदय

जोरहाट, 10 जुलाई (पू.सं.)। 'एक पेड़ माँ के नाम' संकल्प के अंतर्गत कल जोरहाट स्थित केन्द्रीय विद्यालय आरआरएल में वन महोत्सव का शानदार आयोजन प्राचार्य डॉ. कृष्ण कुमार मोटला के निर्देशन में किया गया। विद्यालय के कक्षा पांचवी से लेकर कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों ने इसमें बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। हरित भविष्य की यात्रा के सपनों को साकार करने की प्रतिज्ञा लेते हुए सभी विद्यार्थियों ने विद्यालय के विज्ञान विभाग के शिक्षकों संतोष कुमार ओझा, शशांक जैन, साक्षी तिवारी, पंकज चौहान एवं पाठ्य सहगामी गतिविधि प्रमुख नंदिता बोरा के मार्गदर्शन में उत्साहपूर्वक भाग लिया। विद्यार्थियों ने विद्यालय परिसर में पर्यावरण की रक्षा हेतु प्रतिज्ञा के साथ-साथ वृक्षारोपण भी किया। साथ ही बैनर और पोस्टर प्रतियोगिता के माध्यम से इस दिशा में जागरूकता भी फैलाने का प्रयास किया गया। प्राचार्य डॉ. मोटला ने सभी का उत्साह बढ़ाया और कार्यक्रम में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को आशीर्वाद दिया तथा पर्यावरण जागरूकता हेतु सजग रहने के साथ सभी की भागीदारी के लिए प्रोत्साहित किया। विद्यालय के प्राचार्य एवं विद्यार्थियों ने वृक्षारोपण किया। कार्यक्रम का संयोजन जीव विज्ञान शिक्षक संतोष कुमार ओझा द्वारा सफलतापूर्वक किया गया।

पुस्तकालय- एक नजर

विद्यालय पुस्तकालय ई-ग्रंथालय सॉफ्टवेयर प्लेटफॉर्म पर 2864 पुस्तकों के साथ सुचारू रूप से कार्य कर रहा है। पुस्तकों का परिसंचारण सॉफ्टवेयर के माध्यम से किया जाता है। इस पुस्तकालय में 03 समाचार पत्र और 16 पत्र-पत्रिकाओं की सदस्यता उपलब्ध है।पुस्तकालय समिति का गठन किया गया है और स्कूल पुस्तकालय एवं प्रक्रियाओं की मार्गदर्शिका के अनुसार बैठकें आयोजित की गई हैं। वार्षिक पुस्तकालय गतिविधि योजना (ALAP) के तहत पुस्तक आदान-प्रदान (पुस्तकोपहार), पाठक शैक्षिक अवलोकन, जोर से पढ़ना और राष्ट्रीय पुस्तकालय सप्ताह जैसी कई गतिविधियाँ आयोजित की गई हैं। राष्ट्रीय पुस्तकालय सप्ताह 2025 के अंतर्गत कई प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं, जिनमें विभिन्न कक्षाओं के छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इन प्रतियोगिताओं में पुस्तक समीक्षा लेखन प्रतियोगिता, कवर डिजाइन प्रतियोगिता, बुकमार्क डिजाइन प्रतियोगिता और लिटररी क्विज़ शामिल हैं।

हाल ही में पुस्तकालय में एक सूचना पट्ट, पुस्तकालय सांख्यिकी बोर्ड और करियर मार्गदर्शन बोर्ड जोड़ा गया है। इस सत्र में हमारे पुस्तकालय संग्रह में 142 नई पुस्तकें जोड़ी गईं, जबकि 618 पुस्तकें (पाठ्यक्रम से बाहर/क्षतिग्रस्त) हटा दी गई हैं।

Celebration of Internation Day of Yoga

Celebration of Bohag Bihu under CCA

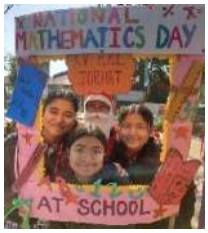

Math Mela in National Mathematics Day

Language Fair under Bharatiya Bhasha Utsav, witnessed by Hon'ble DC,KVS,Ghy Region

Science Mela in National Science Day

School Level RSBVP

Cleanliness Drive at school and neighbourhood

Ek Ped Maa Ke Naam drive

Photos from the school-level Kho Kho event for boys (left and center) and the Kabaddi event for girls (right), cheered on by Principal Dr. K.K. Motla. The events were organized under the Sports Department, overseen by Shri Ejit Singh, TGT (P&HE).

Cherishing Moments of Joy & Celebration

बाल दिवस समारोह

स्वतंत्रता दिवस एवं गणतंत्र दिवस का उत्सव

केविएस स्थापना दिवस समारोह

सीआरपीएफ कैम भाइयों के साथ रक्षाबंधन का उत्सव

प्रकाश पर्व दीपावली का उत्सव

दादा-दादी, नाना-नानी: हमारे आशीर्वाद

छात्र रक्षाबंधन उत्सव मनाने के लिए राखी बनाने में संलग्न हैं।

छात्र दीपावली पर्व के लिए शुभकामना कार्ड डिजाइन करते हुए

छात्रों ने अपनी कलात्मक प्रतिभा को उजागर करते हुए दीवारों को रंगीन कैनवास में बदल दिया, श्री राम कुमार पटेल, टीजीटी (एई) के मार्गदर्शन में।

गतिविधियों के विजेताओं का सम्मान

प्रातः कालीन सभा के विशेष परिदृश्य

माननीय उपायुक्त एवं सहायक आयुक्त का विद्यालय भ्रमण

माननीय अध्यक्ष, वि.प्र.स. का विद्यालय दौरा

प्रार्थना सभा गतिविधियों के दौरान

CANVAS OF COLOUR

THE COLOURS SPLASHED

Subhankar Borah,VII

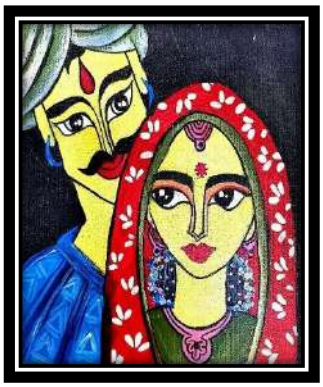

Priyadarshini Baruah,VIII

Himanshu Das,VII

Hreet Mazumder,VI

Khushaansh Kachari,VI

Rudrayan Das,VIII

Kasturi Bora, VI

Pratyusha P Dutta,VI

Anshuman Das,VI

Akshaj Mishra,VI

Princhi Priya Borah,VIII

Arni Das, III

Kristina Das,I

Kangkandi Pegu,II

Priyanki Payeng,IV

Avashree Boruah,III

BATCHES OF SESSION 2024-25

BATCHES OF SESSION 2024-25

STAFF OF THE VIDYALAYA

United in purpose, driven by passion – the heartbeat of our institution

One Click, Endless Updates – Join Our Digital

FOLLOW US ON

https://www.facebook.com/rrl.jorhat

https://www.facebook.com/profile.php?id=61560591590566
(Facebook Page)

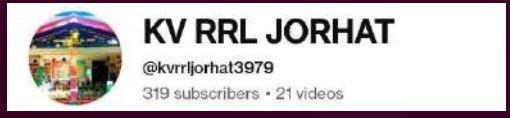

https://youtube.com/@kvrrljorhat3979?si=smax4GKcIUZpH_Ke

Take a look at kvrrljorhat (@kvrrljorhat):
https://x.com/kvrrljorhat?t=HSHSMja3Eng82cz_OT64Ag&s=08

Thank you for taking the time to explore our magazine!